● वर्ष : 04 ● अंक : 09 ● फरवरी 2026 ● हिन्दी मासिक पत्रिका ₹ 40/-

RNI : CHHHIN 2022/86325

# स्वतंत्र बोल

www.swatantrabol.com

## विषमताओं से दूर भारतीय साहित्य..

# मोदी संग बढ़त हे छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ रजत महोत्सव 25



## पीएम आवास योजना

**26 लाख**
से अधिक परिवारों को पक्की छत देने वाले

## महतारी वंदन योजना

**70 लाख**
महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने वाले

## पीएम किसान सम्मान निधि

**26 लाख**
किसानों के चेहरे पर मुस्कान लौटाने वाले

## तेंदूपत्ता संग्रहण दर ₹5500 मानक बोरा

**13 लाख**
संग्राहक परिवारों के चेहरे पर मुस्कान लाने वाले

## उद्यम क्रांति योजना

युवाओं को स्वरोज़गार के लिये **50% सब्सिडी** पर ब्याजमुक्त ऋण उपलब्ध कराने वाले

## दीनदयाल उपाध्याय भूमिहीन कृषि मजदूर कल्याण योजना

**5.62 लाख**
भूमिहीन कृषि मजदूरों को प्रतिवर्ष **₹10,000** की आर्थिक सहायता देने वाले

## प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना

**37 लाख**
महिलाओं को धुएं से मुक्ति दिलाने वाले

## श्री रामलला अयोध्या धाम दर्शन योजना

**37 हजार**
से अधिक राम भक्तों को अयोध्या धाम की निःशुल्क यात्रा कराने वाले

# छत्तीसगढ़ में शांति, विश्वास और विकास का मार्ग हो रहा प्रशस्त



श्री विष्णु देव साय
मान. मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़

RNI : CHHHIN 2022/86325

# स्वतंत्र बोल

www.swatantrabol.com

वर्ष : 04, अंक : 09, फरवरी 2026

प्रेरणास्त्रोत
स्व. जीवन गिरि गोस्वामी

संपादक
राहुल गिरि गोस्वामी

कानूनी सलाहकार
आनंद मोहन तिवारी
दिनेश मिश्रा

प्रचार-प्रसार-विज्ञापन
शेखर सागर

ले-आउट/डिजाइन
द्वारिका प्रसाद साहू

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक
राहुल गिरि गोस्वामी द्वारा
डी-317 बैंक ऑफ बड़ौदा के सामने
टैगोर नगर, रायपुर ( छ.ग. )
पिन-492001 से प्रकाशित
एवं सागर प्रिंटर्स, पुरानी बस्ती, रायपुर ( छ.ग. )
पिन-492001 से मुद्रित।
सम्पादक - राहुल गिरि गोस्वामी

रजिस्टर्ड कार्यालय
डी-317 बैंक ऑफ बड़ौदा के सामने
टैगोर नगर, रायपुर ( छ.ग. )
पिन-492001
Email : Bolswatantra@gmail.com
Phone : 9754374333

( समस्त न्यायालीन प्रकरणों के
निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र रायपुर होगा। )

भारतीय साहित्य सद्भाव का संदेश देते है 03

लोकभवन में राज्य स्थापना दिवस 08

डॉ. रामचंद्र और सुनीता ताई को पद्मश्री 10

सुशासन से समृद्धि की ओर छत्तीसगढ़ 13

'एक धड़कन, जिसने जिंदगी बदल दी' 16

संविधान, लोकतंत्र और सुशासन के रास्ते
विकसित छत्तीसगढ़ का निर्माण सरकार.. 22

जिन हाथों ने कभी बंदूक थामकर हिंसा.. 24

पहाड़ों पर विराजे माँ बम्लेश्वरी 26

भारत ने छठी बार जीता अंडर-19.. 31

# छाप छोड़ने में नाकाम मंत्री..!

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की सरकार ने अपने कार्यकाल के दो साल पूरे कर लिए। दो सालों में प्रदेश में अनेक परिवर्तन भी दिखे, और प्रदेश विकास की दिशा में बढ़ता जा रहा है। सरकार ने 13 मंत्री भी बनाए है ताकि प्रदेश का चहुमुखी विकास हो पर अधिकांश मंत्रियों में आपसी सामंजस्य का अभाव है। चुनिंदा मंत्रियों के अलावा बाकी मंत्री अपना छाप नहीं छोड़ सके है और बहुत जल्दबाजी में दिखते है। संगठन ने पहली बार विधायक बने कार्यकर्ताओं को सीधे मंत्री बनाकर दूसरी पंक्ति तैयार करने की कोशिश की है पर नए नवेले मंत्री अपनी छाप नहीं छोड़ पा रहे है। सुख सुविधाओं और सत्ता सुख में इतने व्यस्त हो गए कि वे अपनी मूल जिम्मेदारी भूल बैठे। ऐसे में सरकार और संगठन को विचार करना होगा।

– राहुल गोस्वामी

# भारतीय साहित्य सद्भाव का संदेश देते है

**राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह रामदत्त चक्रधर जी ने विश्व संवाद केंद्र छत्तीसगढ़ के 'समरस छत्तीसगढ़' विशेषांक का विमोचन किया। विमोचन कार्यक्रम शनिवार 17 जनवरी को प्रान्त कार्यालय जागृति मंडल में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रान्त संघचालक डॉ. टोपलाल वर्मा ने की। इस अवसर पर रामदत्त चक्रधर ने कहा, भारत वर्ष का इतिहास एवं समाज जीवन की रचना अत्यंत प्राचीन है। जो समाज जितना प्राचीन होता है, उतना ही उतार-चढ़ाव देखता है। समाज जब एक रस होता है तो उत्थान की ओर अग्रसर होता है।**

उन्होंने कहा कि शरीर के अंगों के काम अलग-अलग हैं, लेकिन सबके अंदर एक रस है। किसी अंग को चोट लगती है तो हर अंग अपनी प्रतिक्रिया देता है। हमारे किसी भी ग्रन्थ में विषमता का कोई उल्लेख नहीं है। आदरणीय डॉ. बाबा साहब भीमराव आंबेडकर भी यह बात कहते हैं। भारतीय साहित्य में कहीं विषमता और शोषण का उल्लेख नहीं है, लेकिन फिर भी समाज में विकृति आई, उसके पीछे सबसे बड़ी वजह अपना स्वत्व और मूल राष्ट्रीय चरित्र को भूलना था। इस्लामिक एवं अंग्रेजों के शासन के समय समाज को तोड़ने का कार्य हुआ। समाज में लोगों ने कठिन से कठिन कार्य स्वीकार्य कर लिया, लेकिन धर्म और अपनी संस्कृति को नहीं छोड़ा।

पूज्य बाबासाहब के आदर्श, उनका चिंतन हमें स्मरण करना होगा। समाज में समरसता के विषय में बहुत अच्छे कार्य हुए, संतों व महापुरुषों के योगदान से विषमता कम हुई है। लेकिन फिर भी समाज में समरसता हेतु प्रबोधन की आवश्यकता है। संत पूज्य रैदास, वीर सावरकर, पं. मदन मोहन मालवीय जी सहित अनेक समाज सुधारकों व माँ भारती के सपूतों ने समरसता के लिए प्रयास किया। पूज्य बाबा गुरु घासीदास जी ने मनखे-मनखे एक समान का मंत्र दिया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वर्धा शिविर में महात्मा गांधी आए तो स्वयंसेवकों से परिचय किया। किसी ने जाति का परिचय नहीं दिया तो वह आश्चर्यचकित रह गए, उन्होंने शाखा कार्य पद्धति की प्रशंसा की। इसी तरह पूज्य बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर ने संघ की शाखा में सामाजिक समरसता का जो भाव देखा, उसकी प्रशंसा की।

# बस्तरवासियों को मिली 'जनजातीय गौरव वाटिका'

**शहर की आपाधापी, धूल और शोर-शराबे से दूर, बस्तरवासियों को प्रकृति की गोद में सुकून के पल बिताने के लिए शुक्रवार को एक भव्य और अनमोल ठिकाना मिल गया। बस्तर की समृद्ध जनजातीय विरासत, परंपरा और नैसर्गिक सौंदर्य को एक सूत्र में पिरोने के उद्देश्य से कुम्हड़ाकोट में निर्मित 'जनजातीय गौरव वाटिका' का लोकार्पण छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा, वन मंत्री केदार कश्यप और विधायक किरण सिंह देव ने किया। लगभग तीन करोड़ रुपये की लागत से तैयार हुई यह वाटिका अब जनता के लिए समर्पित कर दी गई है, जो न केवल पर्यटन का नया केंद्र बनकर उभरी है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी एक अनूठी मिसाल पेश कर रही है।**

शुक्रवार शाम आयोजित समारोह में उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री केदार कश्यप, विधायक किरण देव के साथ जिला पंचायत अध्यक्ष वेदवती कश्यप और छत्तीसगढ़ बेवरेजेस कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष श्रीनिवास मद्दी, सीसीएफ आलोक तिवारी, स्टायलो मंडावी, संचालक कांगेर वैली सहित अन्य प्रमुख स्थानीय जनप्रतिनिधि भी उपस्थित रहे।

लोकार्पण के पश्चात उपमुख्यमंत्री और अन्य अतिथियों ने वाटिका का अवलोकन किया। वन मंडलाधिकारी उत्तम कुमार गुप्ता ने निरीक्षण के दौरान अतिथियों को अवगत कराया कि करीब 25 एकड़ के विशाल क्षेत्र में फैले इस प्रोजेक्ट को शुरुआत में एक हेल्थ पार्क के रूप में परिकल्पित किया गया था, जिसे बाद में एक भव्य वाटिका का रूप दिया गया। उपमुख्यमंत्री ने यहाँ स्वास्थ्य के प्रति जागरूक नागरिकों के लिए बनाए गए 1700 मीटर लंबे वॉकिंग ट्रेल, योगा शेड, योगा जोन और ओपन जिम जैसी आधुनिक सुविधाओं की सराहना की। उन्होंने वॉकिंग ट्रेल के बीच-बीच में बनाए गए 'गपशप ज़ोन' और पारिवारिक आयोजनों के लिए निर्मित पाँच सुंदर पगोड़ा को भी देखा, जो अब पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बन चुके हैं।

वाटिका भ्रमण के दौरान उपमुख्यमंत्री ने यहाँ की 'इको-फ्रेंडली' नीति और 'प्लास्टिक फ्री ज़ोन' के नियम को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक बड़ा कदम बताया। वाटिका के बीच में निर्मित तालाब और आइलैंड

ने सभी का मन मोह लिया।

आगंतुकों की सुविधाओं के लिए प्रवेश द्वार पर भव्य पार्किंग और प्रसाधन की व्यवस्था भी सुचारू रूप से शुरू हो गई है। वन विभाग द्वारा भविष्य में यहाँ ट्री-हाउस बनाने और एडवेंचर स्पोर्ट्स शुरू करने की योजना की जानकारी भी दी गई। उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा द्वारा किए गए इस लोकार्पण के साथ ही अब 'जनजातीय गौरव वाटिका' बस्तर के पर्यटन मानचित्र पर एक प्रमुख स्थल के रूप में अंकित हो गई है।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा तथा वन मंत्री केदार कश्यप द्वारा विभिन्न स्व-सहायता समूहों और हितग्राहियों को कुल 1 करोड़ 22 लाख रुपये से अधिक की राशि के चेक वितरित किए। इस पहल के माध्यम से शासन ने वनांचल में स्वरोजगार को बढ़ावा देने और वन आश्रित परिवारों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया है।

उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने 'वृत्त स्तरीय चक्रीय निधि' के तहत महिला स्व-सहायता समूहों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए 1 करोड़ 20 लाख 13 हजार रुपये का ऋण वितरित किया। इसमें सबसे बड़ी राशि बकावण्ड के 'मां धारणी करणी स्व-सहायता समूह' को प्रदान की गई, जिन्हें काजू प्रसंस्करण और विपणन जैसे बड़े कार्यों के लिए 50 लाख रुपये का चेक सौंपा गया। इसी कड़ी में, आसना के 'गोधन स्व-सहायता समूह' को गाय पालन के लिए 34 लाख रुपये की राशि दी गई। इसके अतिरिक्त, श्री शर्मा ने घोटिया और भानपुरी के समूहों को इमली संग्रहण व प्रसंस्करण के लिए क्रमशः 13.13 लाख और 13 लाख रुपये तथा कोलेंग की समिति को दोना-पत्तल निर्माण हेतु 10 लाख रुपये की राशि वितरित कर स्थानीय उद्यमों को प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम के दौरान उप मुख्यमंत्री ने मानवीय संवेदनाओं का परिचय देते हुए दुख की घड़ी में पीड़ित परिवार को संबल भी प्रदान किया। उन्होंने 'राजमोहनी देवी तेंदूपत्ता संग्राहक सामाजिक सुरक्षा बीमा योजना' के तहत कुरंदी निवासी कमलोचन नाग को 2 लाख रुपये की बीमा राशि का चेक सौंपा। यह सहायता राशि उनकी पत्नी स्वर्गीय भारती नाग के आकस्मिक निधन के पश्चात स्वीकृत की गई थी। उप मुख्यमंत्री द्वारा किया गया यह वितरण न केवल लाभार्थियों के लिए आर्थिक मदद है, बल्कि बस्तर के सुदूर वनांचलों में रोजगार और सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में एक ठोस कदम भी है। इस दौरान उपस्थित महिला समूहों के सदस्यों से इमली, काजू के प्रोसेसिंग की गतिविधियों का संज्ञान लेकर बाजार की उपलब्धता एवं मार्केटिंग की व्यवस्था के संबंध चर्चा किए।

# स्वच्छता अभियान से बदली तस्वीर

छत्तीसगढ़ में स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के अंतर्गत हजारों संस्थागत शौचालयों का निर्माण किया गया, किंतु समय के साथ यह स्पष्ट हुआ कि केवल निर्माण से ही स्वच्छता का लक्ष्य पूर्ण नहीं होता। नियमित सफाई, रख-रखाव एवं प्रबंधन के अभाव में अनेक संस्थागत शौचालय अपनी उपयोगिता खोने लगे, जिससे विद्यालयों, पंचायत भवनों एवं सार्वजनिक संस्थानों में स्वच्छता की मूल अवधारणा प्रभावित होने लगी। इसी चुनौती को अवसर में बदलते हुए मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले ने 'जर्नी ऑफ सेनिटेशन हाइजिन जोश' के रूप में एक अभिनव पहल की, जिसने स्वच्छता को अभियान से आगे बढ़ाकर एक सतत और व्यवस्थित मॉडल का स्वरूप प्रदान किया।

- **स्वच्छ भारत मिशन की नई दिशा: एमसीबी का 'जर्नी ऑफ सेनिटेशन हाइजिन जोश' मॉडल**
- **निर्माण से प्रबंधन तक: भारत की स्वच्छता यात्रा में एमसीबी की निर्णायक पहल**
- **अभियान नहीं, व्यवस्था: एमसीबी ने बदली राष्ट्रीय स्वच्छता की सोच**

## प्रशासनिक संकल्प से व्यवहारिक मॉडल तक की यात्रा

इस पहल की नींव जिले के कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के दूरदर्शी दृष्टिकोण में रखी गई, जिन्होंने स्वच्छता को केवल एक विभागीय जिम्मेदारी नहीं, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन के प्रभावी माध्यम के रूप में देखा। जिला पंचायत सीईओ श्रीमती अंकिता सोम के मार्गदर्शन में इस अवधारणा को जमीनी स्तर पर सफलतापूर्वक लागू किया गया। 'जर्नी ऑफ सेनिटेशन हाइजिन जोश' के माध्यम से यह सुनिश्चित किया गया कि संस्थागत शौचालयों की सफाई एक नियमित, पेशेवर एवं जवाबदेह प्रणाली के अंतर्गत हो, जिससे परिसंपत्तियों की आय बढ़े और उपयोगकर्ताओं का विश्वास पुन: स्थापित हो।

## प्रदेश नेतृत्व से मिली दिशा और पहचान

नववर्ष के अवसर पर प्रदेश के कृषि मंत्री रामविचार नेताम एवं स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल द्वारा जिले के खड़गवां ब्लॉक से इस पहल का शुभारंभ किया गया, जिससे इसे राज्य स्तर पर नई पहचान मिली। यह अवसर स्वच्छता प्रबंधन की सोच में बदलाव का प्रतीक बना। पहली बार छत्तीसगढ़ में संस्थागत शौचालयों के लिए ऐसा मॉडल सामने आया, जिसमें स्वच्छता को रोजगार, सेवा और सम्मान से जोड़ा गया।

## संस्थागत शौचालयों में दिखने लगा बदलाव

इस पहल के अंतर्गत जनपद पंचायत आनंद नगर,

भरतपुर एवं खड़गवां क्षेत्रों में अब तक लगभग 60 संस्थागत शौचालयों की वैज्ञानिक एवं गहन सफाई की जा चुकी है। इनमें विद्यालय, आंगनबाड़ी केंद्र, पंचायत भवन एवं अन्य सार्वजनिक संस्थान शामिल हैं। सफाई उपरांत न केवल शौचालयों की भौतिक स्थिति में सुधार हुआ है, बल्कि उपयोगकर्ताओं के व्यवहार में भी सकारात्मक परिवर्तन देखा गया है।

## स्वच्छता से आत्मनिर्भरता और भविष्य की राह

इस नवाचार का सबसे सशक्त पक्ष यह है कि यह स्वच्छता को आय सृजन एवं आत्मनिर्भरता से जोड़ता है। वर्तमान में तीन स्वच्छता प्रहरियों द्वारा लगभग 60 संस्थागत शौचालयों की सफाई कर 12 हजार रुपये से अधिक की अतिरिक्त आय अर्जित की जा चुकी है। निजी एवं शासकीय दोनों स्तरों पर इस सेवा की मांग बढ़ रही है। 'जर्नी ऑफ सेनिटेशन हाइजिन जोश' आने वाले समय में छत्तीसगढ़ में स्वच्छता प्रबंधन का एक स्थायी, विस्तार योग्य और प्रेरणादायी मॉडल बनकर उभर रहा है, जो यह सिद्ध करता है कि नवाचार, प्रशासनिक इच्छाशक्ति और सामुदायिक सहभागिता मिलकर सामाजिक परिवर्तन की नई इबारत लिख सकते हैं।

## स्वच्छता प्रहरी

प्रारंभिक चरण में जिले के तीनों जनपद पंचायतों हेतु कुल तीन स्वच्छता प्रहरियों को संलग्न किया गया है। जनपद पंचायत मनेंद्रगढ़ अंतर्गत प्रतीम कुमार, जनपद पंचायत भरतपुर में लल्लू कुमार तथा जनपद पंचायत खड़गवां के लिए राजेश कुमार स्वच्छता प्रहरी के रूप में कार्यरत हैं।

## स्वच्छता प्रहरियों को उपलब्ध कराई गई सामग्री

स्वच्छता प्रहरियों को जिला प्रशासन की ओर से सफाई कार्य को प्रभावी, सुरक्षित एवं व्यवस्थित रूप से संपादित करने हेतु आवश्यक उपकरण एवं सुरक्षा सामग्री उपलब्ध कराई गई है। इसमें सफाई हेतु वॉश प्रेशर गन, हार्पिक, ब्रश, झाड़ू, फिनायल, रूम फ्रेशनर सहित सुरक्षा सामग्री के रूप में रिफ्लेक्टिव जैकेट, निर्धारित ड्रेस, गमबूट, हेलमेट, हैंड ग्लव्स एवं मास्क शामिल हैं। इन संसाधनों की उपलब्धता से स्वच्छता प्रहरियों द्वारा संस्थागत शौचालयों की नियमित, वैज्ञानिक एवं सुरक्षित सफाई सुनिश्चित हो रही है, जिससे स्वच्छता व्यवस्था को स्थायित्व मिलने के साथ-साथ कार्य की गुणवत्ता में भी निरंतर सुधार हो रहा है।

# लोकभवन में राज्य स्थापना दिवस

## लोकभवन में मनाया गया 6 राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों का स्थापना दिवस

**राज्यपाल रमेन डेका के मुख्य आतिथ्य में राजभवन में 6 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों का स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर श्री डेका ने कहा कि सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की पहचान भले ही अलग-अलग हो लेकिन इन सब की आत्मा एक भारत में है।**

केन्द्र सरकार के 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम के तहत विविधता में एकता की भावना को बढ़ावा देने के लिए सभी राज्य एक दूसरे का स्थापना दिवस मनाते है। इसी कड़ी में आज लोकभवन के छत्तीसगढ़ मण्डपम में आंध्रप्रदेश, चंडीगढ़, हरियाणा, पंजाब, झारखंड और नागालैण्ड राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों का स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर श्री डेका ने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न राज्यों की भाषा, संस्कृति, परंपराओं और प्रथाओं के ज्ञान का आदान-प्रदान करना है जो

आपसी समझ और सद्भाव को बढ़ावा देगा, जिससे भारत की एकता और अखंडता मजबूत होगी। इस परिप्रेक्ष्य में आज का कार्यक्रम एक गौरवपूर्ण क्षण है।

उन्होंने कहा कि हर राज्य का स्थापना दिवस, उस राज्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिन होता है। राज्य की समृद्धि और विकास का गवाह यह दिन हमें अपने राज्य की स्थापना के मूल उद्देश्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने और लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने का रास्ता दिखाता है। इन राज्यों का स्थापना दिवस, केवल उनके विकास की यात्रा का उत्सव नहीं है बल्कि भारत की विविधता और एकता का प्रतीक है।

उन्होंने विभिन्न राज्यों की विशेषताओं को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि देश के विकास में आंध्रप्रदेश का शानदार योगदान है। यह राज्य मछली के लिए प्रसिद्ध है। यह तिरूपति बालाजी की देव भूमि है। इसी तरह पंजाब वीरों की भूमि है। गुरूतेग बहादुर के बलिदान को सब जानते है। भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व समुदाय में पंजाबियों का बहुत योगदान है। हरियाणा का उल्लेख करते हुए कहा कि यह राज्य प्राचीन परंपरा का मूलभूत केंद्र है। यह वही भूमि जहां से महाभारत का संदेश पूरी मानवता तक पहुंचा। झारखण्ड राज्य खनिज का हब है। चंडीगढ़ बहुत सुंदर और नियोजित प्रदेश है। नागालैण्ड बहुत खूबसुरत राज्य है। यहां की जनजातीय संस्कृति अत्यंत समृद्ध है। इस राज्य के लोगों की बहादुरी की कहानियां दुसरों को प्रेरित करती हैं।

श्री डेका ने कहा कि एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम हमारे बीच संवाद, सहयोग और सद्भाव को और मजबूत करता है।

समारोह में विभिन्न राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों के प्रतिनिधियों ने अपने राज्यों की विशेषताओं, परंपरा, संस्कृति पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने विभिन्न राज्यों की संस्कृति एवं लोक परंपरा आधारित संस्कृति कार्यक्रमों की रंगारंग प्रस्तुति दी। विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधियों को राज्यपाल ने राजकीय गमछा और स्मृति चिन्ह भेंट किया। उन्होंने भी राज्यपाल को अपने राज्य की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

कार्यक्रम में विधायक पुरंदर मिश्रा, राज्यपाल के सचिव डॉ. सी. आर. प्रसन्ना सहित अन्य अधिकारी, वनवासी आश्रम की छात्राएं, महिलाएं एवं गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

# डॉ. रामचंद्र और सुनीता ताई को पद्मश्री

छत्तीसगढ़ का बस्तर अंचल अपनी सघन वनराशि, विशिष्ट जनजातीय संस्कृति और प्रकृति से आत्मीय संबंध के लिए जाना जाता है। किंतु बीते कई दशकों से यह क्षेत्र नक्सल हिंसा, सशस्त्र संघर्ष, भय और अविश्वास के वातावरण से भी जूझता रहा है। ऐसे कठिन हालात में यदि कोई व्यक्ति अपना संपूर्ण जीवन नि:स्वार्थ भाव से जनजाति समाज की सेवा में अर्पित कर दे, तो वह केवल चिकित्सक नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का संवाहक बन जाता है। ऐसे ही प्रेरणादायी व्यक्तित्व हैं डॉ. रामचंद्र गोडबोले और उनकी सहधर्मचारिणी सुनीता ताई – जिन्होंने बस्तर को ही अपना कर्मक्षेत्र और घर बना लिया।

महाराष्ट्र के सतारा जिले में जन्मे डॉ. गोडबोले ने आयुर्वेदिक चिकित्सा एवं शल्य चिकित्सा में औपचारिक शिक्षा प्राप्त की। लगभग 18–19 वर्ष की आयु में अल्बर्ट श्वाइत्ज़र के जीवन पर आधारित एक पुस्तक पढ़ी, जिसने उनके सोचने की दिशा ही बदल दी। युवावस्था में ही उनके मन में समाज सेवा का बीज अंकुरित हो गया था। डॉ. गोडबोले ने तय कर लिया कि चिकित्सा उनके लिए आजीविका नहीं, बल्कि साधना होगी।

पढ़ाई पूरी करने के बाद वे वनवासी कल्याण आश्रम से जुड़े और नासिक जिले के कनाशी स्थान पर निवास करने वाले भील जनजाति समाज के बीच स्वास्थ्य सेवा का कार्य प्रारंभ किया। कुछ वर्षों बाद, मात्र 28 वर्ष की आयु में, उन्हें छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले के बारसूर गांव भेजा गया, जहां एक स्वास्थ्य केंद्र लंबे समय से बंद पड़ा था। यही स्थान उनकी स्थायी कर्मभूमि बन गया।

कल्याण आश्रम ने उन्हें अकेले न जाने की सलाह दी और पहले विवाह करने का सुझाव दिया। इसी दौरान उनकी मुलाकात पुणे की सामाजिक कार्यकर्ता सुनीता पुराणिक से हुई, जो महिला सशक्तिकरण और साक्षरता अभियानों में सक्रिय थीं। सुनीता ताई भी वनवासी कल्याण आश्रम के रायगढ़ जिले में स्थित जांभिवली केंद्र पर कार्य कर रही थी। दोनों के विचार और सेवा-भावना में समानता थी। विवाह के मात्र दो सप्ताह बाद ही दोनों सुदूर क्षेत्र बस्तर पहुंच गए और जनजाति समाज के साथ जीवन को आत्मसात कर लिया।

आज डॉ. गोडबोले और उनकी पत्नी बारसूर गांव में एक साधारण दो-कमरे के मकान में रहते हैं – ईंट की दीवारें, टीन की छत और चारों ओर फैला घना जंगल। उनके घर से कुछ दूरी पर खड़ी एम्बुलेंस उनकी सेवा-प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

डॉ. गोडबोले कहते हैं, – 'यहां के लोगों के पास दवाइयों के पैसे भी मुश्किल से होते हैं, परिवहन की व्यवस्था तो लगभग नहीं के बराबर है। इसलिए यह जिम्मेदारी हमें स्वयं उठानी पड़ी।'

शुरुआती वर्षों में जनजाति समाज में आधुनिक चिकित्सा के प्रति गहरा संदेह था। बीमार होने पर पहले मांत्रिकों और ओझा-गुनियों से उपचार कराया जाता था। जब वे असफल होते, तब डॉक्टर को बुलाया जाता। वह भी सीधे क्लिनिक आने की परंपरा नहीं थी – जंगल में आग जलाकर धुआं किया जाता, ताकि डॉक्टर उस संकेत को देखकर मरीज तक पहुंचे। बाहरी दुनिया का भय इतना गहरा था कि एक बार डॉ. गोडबोले एक मरीज को इलाज के लिए जगदलपुर ले गए, तो वह फिर कभी गांव नहीं लौटा। बाद में पता चला कि शहर उनके लिए किसी अनजान देश जैसा था – भाषा, कागजी प्रक्रिया और पैसों की कमी उन्हें डरा देती थी।

इन्हीं अनुभवों से डॉ. गोडबोले निष्कर्ष पर पहुंचे कि स्वास्थ्य सेवा गांव में ही, सरल और न्यूनतम खर्च पर उपलब्ध कराना ही एकमात्र व्यवहारिक समाधान है। उन्होंने स्थानीय हलबी भाषा सीखी, लोगों के साथ समय बिताया और धैर्यपूर्वक विश्वास अर्जित किया। धीरे-धीरे उनके क्लिनिक में नियमित मरीज आने लगे। इसी दौरान सुनीता गोडबोले ने जनजाति महिलाओं का एक समूह गठित किया, जो महुआ, इमली, कच्चे आम जैसे वनोपज को उचित मूल्य पर बेचने में सहायक बना।

2002 में पारिवारिक कारणों से उन्हें कुछ वर्षों के लिए सतारा लौटना पड़ा। कुछ साल दोनों ने महाराष्ट्र के पालघर जिला स्थित विक्रमगढ़ क्षेत्र में भी अपनी सेवाएं प्रदान की। लेकिन बस्तर से भावात्मक संबंध उनको फिर से बस्तर की ओर खींच रहा था। 2010 में जब वे पुन: बस्तर लौटे, तब सरकारी स्तर पर 108 एम्बुलेंस और टेली-परामर्श जैसी योजनाएं शुरू हो चुकी थीं, लेकिन ज़मीनी सच्चाई यह थी कि आज भी मीलों तक वे ही एकमात्र डॉक्टर थे।

2012 में उन्होंने एक अभिनव पहल की। स्थायी क्लिनिक बंद कर उन्होंने चलित चिकित्सा शिविरों की शुरुआत की – हर महीने तीन बार, एक दिन एक गांव, सुबह 11 बजे से तब तक, जब तक अंतिम व्यक्ति का उपचार न हो जाए। साथ ही उन्होंने आरोग्य मित्र मंडल' की स्थापना की, जिसके अंतर्गत गांव के युवाओं को प्राथमिक उपचार, रोग-निवारण और उपचार समन्वय का प्रशिक्षण दिया गया। अब तक लगभग 65 जनजातीय युवक-युवतियां अभियान से जुड़ चुके हैं। सुनीता ताई ने भी 'अपने शरीर को जानो' इस अनोखे प्रयोग के माध्यम से बस्तर क्षेत्र के सैकड़ों स्कूलों में बालक-बालिकाओं में जागरण का कार्य आरंभ किया है। लगभग तीन दशकों से अधिक वह महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। उनके किए कार्य के माध्यम से सैकड़ों महिलाएं आत्मनिर्भर होकर विकास की राह पर चल रही हैं।

पिछले कुछ वर्षों से हैदराबाद के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. मुकुंद करमलकर भी चिकित्सा शिविरों में सहयोग कर रहे हैं। डॉ. गोडबोले जी का सपना है कि बस्तर क्षेत्र को मलेरिया, टीबी और एनीमिया जैसी गंभीर बीमारियों से मुक्त किया जाए। वे स्वीकार करते हैं कि यह लक्ष्य बड़ा है, पर असंभव नहीं।

जब उनसे पूछा जाता है कि क्या उन्होंने कभी हार मानने के बारे में सोचा, तो वे सहज मुस्कान के साथ कहते हैं – 'मुझे अपना काम प्रेम से करना आता है। जब तक स्थानीय जनजाति युवा स्वयं आगे नहीं आते, तब तक मैं पूरी निष्ठा से यह कार्य करता रहूंगा। मेरे लिए यह सेवा ही ईश्वर-पूजा है।'

तीन दशक की सेवा-यात्रा के बाद डॉ. रामचंद्र और सुनीता ताई गोडबोले आज गर्व से कहते हैं – 'यह स्थान अब हमारा घर है।'

उनका जीवन जीवंत उदाहरण है कि सच्ची सेवा सीमाओं, भय और भौतिक सुविधाओं से परे होती है, और जब संकल्प दृढ़ हो, तो बस्तर भी साधना-स्थली बन जाता है। लगभग तीन दशक से अधिक डॉक्टर रामचंद्र और सुनीता ताई बस्तर के वनवासियों के साथ घुल मिल गए हैं। प्रचार और प्रसिद्धि से वह इतने दूर हैं कि उनके कार्य के बारे में जानने के लिए काफी प्रयास करने पड़ेंगे। लेकिन बस्तर के वनवासियों ने उन्हें 30 साल पहले ही अपने हृदय में स्थान दिया है।

भारत सरकार की ओर से दोनों को पद्मश्री पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की गई है।

# आरएसएस का हिन्दू सम्मेलन

**हिन्दू धर्म, परंपरा, संस्कृति और मूल्यों की रक्षा हेतु हिन्दू सम्मेलन समिति, गंगापुर ने भव्य 'हिन्दू सम्मेलन' का आयोजन किया। हिन्दू सम्मेलन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि हमें एक ऐसा बलशाली और चरित्रवान समाज बनाना है, जिससे दुनिया भी प्रभावित हो। इसके लिए हमें अपना स्वभाव और आचरण बदलना होगा। हिन्दू समाज ही भारत के अच्छे भविष्य के लिए ज़िम्मेदार है। इसलिए अच्छा परिवर्तन चाहिए तो स्वयं से शुरू करना होगा। उन्होंने पंच परिवर्तन का विषय सम्मेलन में उपस्थित समाज के समक्ष रखा।**

गंगापुर के जिला परिषद स्कूल के मैदान में आयोजित हिन्दू सम्मेलन संतों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में ह . भ. प. गुरुवर्य भास्करगिरि जी महाराज (श्री क्षेत्र देवगढ़ संस्थान), ह. भ. प. गुरुवर्य महंत रामगिरि जी महाराज (मठाधीश, गोवर्धन धाम, श्री क्षेत्र सरलाबेट), जगद्गुरु श्री श्री 1008 स्वामी शांतिगिरि जी महाराज (जगद्गुरु श्री जनार्दन स्वामी आश्रम, श्री क्षेत्र वेरुल) उपस्थित रहे।

सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि हम समाज को बदलना चाहते हैं। उसके लिए हमें मिलकर काम करना होगा। सिर्फ बातों में नहीं, बल्कि कृति चाहिए। उसके लिए हमें सभी जाति-वर्गों में दोस्ती करनी चाहिए। सबसे सद्भावना होनी चाहिए। परिवार में हमारे संस्कृति और परम्परा पर बात होनी चाहिए। हमें ध्यान रखना चाहिए कि अपना जीवन जीते हुए पर्यावरण को नुकसान न हो। हमें विदेशी सामान इस्तेमाल करने के बजाय देसी वस्तुओं को प्रधान्य देना चाहिए। हमें आत्मनिर्भर बनना है। अगर हम आत्मनिर्भर बनेंगे, तो हमारी शक्ति का महत्व होगा। अगर ये सभी बातें कृति में लाई जाएं, तो हमारा समाज सुरक्षित, संपन्न बनेगा।

कार्यक्रम में उपस्थित संतों ने आशीर्वचन दिया। उन्होंने समाज को सद्भाव और कुटुंब प्रबोधन का महत्व बताया। भास्करगिरि जी महाराज ने कहा, 'संघ ने सौ साल तक अनेक अपमान सहते हुए यात्रा की। उन्होंने जाति के आधार पर बंटे हिन्दू समाज को संगठित किया। उन्होंने हिन्दू समाज से सामाजिक एकता बनाए रखते हुए आगे बढ़ने का आह्वान किया। महंत रामगिरि जी महाराज ने बांग्लादेश में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों की ओर ध्यान दिलाया। उन्होंने कहा कि हमें संगठित रहना होगा। हमें अपने समाज से जातिवाद को पूरी तरह खत्म करना होगा। महंत शांतिगिरि जी महाराज ने कहा कि समाज को अपनी संस्कृति का पालन करना जरूरी है। विदेशी संस्कृति से प्रभावित होने के कारण हमारी पीढ़ी गलत रास्ते पर जा रही है। अपने परिवार को संस्कारी परिवार बनाएं, जिससे हमारा समाज अच्छा रहेगा। गाथामूर्ति रामभाऊ जी महाराज ने लिखित स्वरूप में आशीर्वाद संदेश भेजा था। उन्होंने कहा कि समाज को इस कार्यक्रम का उद्देश्य पूरा करके संतों के संदेश पर काम करना चाहिए।

# सुशासन से समृद्धि की ओर छत्तीसगढ़

**मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने 2 वर्ष के मुख्यमंत्रित्व काल में छत्तीसगढ़ राज्य में विकास का एक नया आयाम गढ़कर राज्य के नागरिकों के दिलों में राज करने वाले मुख्यमंत्री के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है। विष्णुदेव साय जनता के बीच के एक ऐसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री हैं जिनकी सदाशयता और दूरगामी योजनाओं से प्रदेश में विकास और प्रगति का राह आसान हुआ है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय आदिवासी पृष्ठभूमि से आते हैं। इस दृष्टि से आदिवासी पृष्ठभूमि से आने वाले वे प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री हैं। प्रदेश मे हाल ही में पुलिस महानिदेशकों एवं पुलिस महानिरीक्षको का सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह शामिल हुए।**

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की सरकार ने एक साल के भीतर छत्तीसगढ़ के किसान भाइयों के खाते में 52 हजार करोड़ रुपए अंतरित कर उन्हें उत्साह से भर दिया है। धान खरीदी समाप्त होने के एक सप्ताह के भीतर किसानों को भुगतान कर दिया गया है। 52 हजार करोड़ रुपए किसानों के खाते में आने से वे खेती किसानी में भरपूर निवेश कर रहे हैं और इससे बाजार भी गुलजार हुए हैं जिससे शहरी अर्थव्यवस्था पर सीधा असर दिख रहा है। ट्रैक्टर आदि की बिक्री ने रिकार्ड आंकड़ा छू लिया है। धान का उचित मूल्य मिलने से किसानों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई और गत वर्ष 25 लाख 72 हजार किसानों ने 149 लाख 25 हजार मीट्रिक टन रिकॉर्ड धान बेचा। सरकार बनने के दूसरे दिन ही केबिनेट की बैठक कर मोदी जी की गारंटी के अनुरूप 18 लाख 12 हजार 743 प्रधानमंत्री आवास उपलब्ध कराने की स्वीकृत करने का निर्णय लिया गया।

विष्णुदेव साय ने अपने दो साल के संक्षिप्त कार्यकाल में छत्तीसगढ़ को सम्पूर्ण देश में एक नई ऊंचाई पर पहुंचाया है। बहुत कम समय में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने प्रदेश की जनता के बीच जाकर पूरे प्रदेश की जनता का विश्वास जीता है और न केवल विश्वास जीता है बल्कि उनके हित को ध्यान में रखकर उन्होंने ऐसी योजनाओं का क्रियान्वयन किया है जिससे छत्तीसगढ़ का समग्र विकास सम्भव हो पाया है। यह केवल और केवल विष्णुदेव साय जैसे एक संवेदनशील, कर्मठ तथा ऊर्जावान मुख्यमंत्री ही सम्भव कर सकते हैं। नक्सल हिंसा प्रभावित गांवों में नियद नेल्लानार योजना के माध्यम से सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य और संचार जैसी मूलभूत सुविधाएं दुर्गम क्षेत्रों तक पहुंच रही है। प्रदेश में अब तक कुल 69 सुरक्षा केंद्र स्थापित किए गए हैं।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने मुख्यमंत्री पद का शपथ लेते ही प्रदेश की समस्त महिलाओं को महतारी वंदन योजना जैसी एक लाभकारी योजना का सौगात दिया है। महतारी वंदन योजना से प्रदेश की महिलाओं को हर माह एक हजार रुपए की राशि दी जाती है जिससे वे स्वावलंबी बन सके एवं स्वयं का रोजगार भी प्रारंभ कर सके। साथ ही प्रदेश भर के किसानों को 2 साल का बकाया बोनस और 31 सौ रुपए प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी जैसे वादों को पूरा कर छत्तीसगढ़ के किसानों का मान बढ़ाया है। प्रदेश की नवीन औद्योगिक नीति से राज्य में अब तक 7.69 लाख रूपए के निवेश के प्रस्ताव मिले हैं।

खरीफ सीजन में उपज का वाजिब कीमत 3100 रूपए प्रति क्विंटल की दर से धान का उपार्जन किया गया। सरकार किसानों से 21 क्विंटल प्रति एकड़ धान खरीदी की है। मुख्यमंत्री श्री साय की नेतृत्व वाली सरकार के माध्यम से किसानों के खाते में 52 हजार करोड़ रूपए की राशि अंतरित (ट्रांसफर) हुई है। प्रदेश के नगर पालिका चुनाव में ऐतिहासिक जनादेश प्राप्त हुआ। प्रदेश में अब ट्रिपल इंजन की सरकार से नगरों का सर्वांगीण विकास होगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे जवानों के अदम्य साहस और सरकार के निरंतर प्रयासों से नक्सलवाद अब अंतिम सांस ले रहा है। केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमितशाह का संकल्प है कि मार्च 2026 तक नक्सलवाद समाप्त कर देंगे। वो संकल्प पूरा होते साफ दिख रहा है विशेषकर बस्तर क्षेत्र में, जो वर्षों से विकास की मुख्यधारा से अछूता रहा है। वहां अब विकास की गंगा बहेगी।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि प्रदेश में बीते 02 वर्षों में 529 नक्सली मारे जा चुके हैं, 1975 नक्सलियों को गिरफ्तार किया गया है और 2628 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया है। प्रदेश के बस्तर अंचल में आतंक का पर्याय रहे हार्डकोर नक्सली लीडर बसवराजू, लक्ष्मी नरसिम्हा चालम उर्फ सुधाकर, और माडवी हिड़मा को न्यूट्रलाइज किया गया इन पर करोड़ों का ईनाम घोषित था।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने प्रदेश के हर वर्ग के लोगों को साथ लेकर चलने का बीड़ा उठाया है। उन्होंने प्रदेश के हर वर्ग की बुनियादी सुविधाओं और जरूरतों को ध्यान में रखते हुए पीएम आवास योजना, कृषक उन्नति योजना, नियद नेल्ला नार, अखरा निर्माण योजना जैसी योजनाओं का शुभारम्भ किया है और जनता के बीच अपनी एक अलग छवि निर्मित की है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय जनता के बीच और हर समुदाय के बीच एक ऐसा पुल बनाना जानते हैं जिससे सभी एक दूसरे से जुड़ सके और सभी प्रदेश के हित में अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह भी कर सके। उन्होंने अपने जीवन का बहुमूल्य समय पद्रेश की जनता को समर्पित कर यह सिद्ध कर दिया है कि उनका जीवन केवल उनका नहीं है अपितु प्रदेश की जनता की निस्वार्थ सेवा के लिए समर्पित है। वे सही मायने में एक ऐसे जननेता हैं जिनके लिए जनता ही सब कुछ हैं। ऐसे सेवाभावी और लोकप्रिय जनसेवक बहुत कम होते हैं जिनके लिए जनता का विकास और जनता का साथ ही सबसे महत्वपूर्ण होता है। यह सभी प्रदेशवासियों के लिए गौरवान्वित होने का विषय है कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय उनके अपने बीच के लोकप्रिय नेता हैं जिनके लिए प्रदेश की जनता की खुशहाली ही सर्वोपरि है।

छगन लोन्हारे, उप संचालक (जनसंपर्क)

# अम्बेडकर अस्पताल में सीटी एंजियोग्राफी शुरू

## हृदय, मस्तिष्क, पेट, फेफड़े व अन्य अंगों की सटीक जांच

पं. नेहरू चिकित्सा महाविद्यालय से संबद्ध डॉ. भीमराव अम्बेडकर स्मृति चिकित्सालय, रायपुर के रेडियोडायग्नोसिस विभाग में अब सीटी एंजियोग्राफी की अत्याधुनिक जांच सुविधा शुरू हो गई है। इसके अंतर्गत सीटी कोरोनरी एंजियोग्राफी, ब्रेन (सेरेब्रल), एब्डोमिनल, पेरिफेरल एवं पल्मोनरी एंजियोग्राफी जांच की जा रही है, जो नॉन इंवेसिव (Non-invasive) पद्धति पर आधारित है। विगत सप्ताह 29 मरीजों की विभिन्न बीमारियों में सीटी एंजियो जाँच हुई जिससे समय रहते उन्हें उचित उपचार मिला।

स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने कहा है कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की अगुवाई में राज्य सरकार स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार और सुदृढ़ीकरण के लिए लगातार ठोस प्रयास कर रही है। आम नागरिकों को बेहतर, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसी दिशा में अस्पतालों के उन्नयन, आधुनिक उपकरणों की उपलब्धता, विशेषज्ञ चिकित्सकों की तैनाती और दूरदराज क्षेत्रों तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने के लिए निरंतर कार्य किए जा रहे हैं।

अम्बेडकर अस्पताल अधीक्षक डॉ. संतोष सोनकर ने इस संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि इस सुविधा के प्रारंभ होने से हृदय, मस्तिष्क, पेट, हाथ-पैर एवं फेफड़ों से संबंधित गंभीर रोगों के शीघ्र, सटीक एवं विश्वसनीय निदान में मदद मिल रही है।

उन्होंने बताया कि गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन करने वाले मरीजों एवं 60 वर्ष से अधिक आयु के मरीजों के लिए सभी जांचें नि:शुल्क हैं। वहीं एपीएल श्रेणी के मरीजों के लिए ओपीडी में सीटी स्कैन 1000 रू. एवं एमआरआई 2000 रू.की दर से उपलब्ध है, जबकि भर्ती एपीएल मरीजों को ये जांच सुविधाएं नि:शुल्क प्रदान की जा रही हैं। रेडियोडायग्नोसिस विभागाध्यक्ष डॉ. विवेक पात्रे ने बताया कि विभाग में उपलब्ध आधुनिक सीटी स्कैन मशीन एवं प्रेशर इंजेक्टर

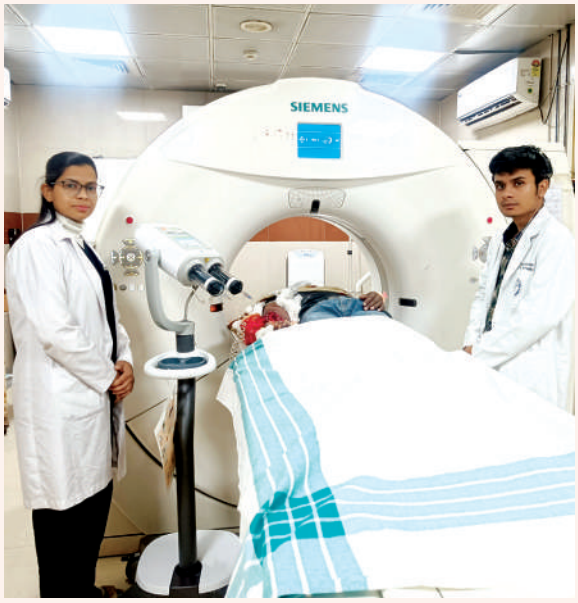


की सहायता से सभी जांच सेवाएं निर्धारित सुरक्षा मानकों के अनुरूप संचालित की जा रही हैं। उन्होंने बताया कि सीटी एंजियोग्राफी की प्रक्रिया कम समय में पूरी हो जाती है, मरीज को असुविधा नहीं होती। इसमें पारंपरिक एंजियोग्राफी की तुलना में रिकवरी टाइम भी कम होता है। उन्होंने यह भी बताया कि सीटी कोरोनरी एंजियोग्राफी में कैथेटराइजेशन की आवश्यकता नहीं होती, जिससे यह पारंपरिक एंजियोग्राफी की तुलना में अधिक सुरक्षित, तेज और सुविधाजनक जांच है।

सीटी कोरोनरी एंजियोग्राफी के माध्यम से हृदय की कोरोनरी धमनियों में होने वाले संकुचन एवं ब्लॉकेज का उच्च गुणवत्ता की विस्तृत (Detailed) 3D इमेजिंग के साथ आकलन किया जाता है। वहीं ब्रेन एंजियोग्राफी से मस्तिष्क की रक्त वाहिकाओं से जुड़ी बीमारियों जैसे स्ट्रोक, एन्यूरिज्म एवं धमनी-शिरापरक विकृति (एवीएम) की सटीक जांच संभव हो पाती है। इस जांच में अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता नहीं पड़ती, जिससे मरीज जांच के बाद सामान्य दिनचर्या में शीघ्र लौट सकता है।

# 'एक धड़कन, जिसने जिंदगी बदल दी'

गांव में मितानिन ने एक दिन कहा था, 'आपके बच्चे की धड़कन बाकी बच्चों से तेज है,' यह वाक्य आज भी रजनी यादव के कानों में गूंजता है। वे बोलते-बोलते रो पड़ती हैं, 'हमने कभी ध्यान ही नहीं दिया अब लगता है, क्यों नहीं दिया!'

गोगांव, रायपुर की रहने वाली रजनी यादव का तीसरा बेटा अरमान, अपने दोनों बड़े भाईयों और दोस्तों के साथ हंसता-खेलता बड़ा हो रहा था। कभी पिट्ठूल खेलता, कभी दौड़ लगाता, सब कुछ सामान्य लगता था। बस बार-बार होने वाला सर्दी-बुखार माता- पिता को थोड़ा परेशान जरूर करता था, लेकिन किसी को अंदेशा नहीं था कि उस मासूम सी हंसी के पीछे एक गंभीर खतरा छिपा है। फिर 13 दिसंबर 2025 का दिन आया। सरोरा स्थित शासकीय स्कूल में, कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह के निर्देशानुसार पहुँची चिरायु टीम ने जब बच्चों की जांच शुरू की, तो अरमान की बारी पर डॉक्टर ठिठक गए। उसके हृदय की धड़कन सामान्य नहीं थी। यही वह पल था, जिसने एक परिवार की जिंदगी की दिशा बदल दी।

प्रोजेक्ट धड़कन छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले की एक स्वास्थ्य पहल है, जिसका उद्देश्य मुख्यमंत्री के निर्देश पर बच्चों में जन्मजात हृदय रोगों (Congenital Heart Diseases - CHDs) का जल्द पता लगाना और उनका मुफ्त इलाज कराना है, जिसमें श्री सत्य साई हॉस्पिटल और जिला प्रशासन मिलकर काम कर रहे हैं, विशेष स्वास्थ्य शिविर लगाकर बच्चों की जांच की जाती है और उन्हें आवश्यक डिजिटल उपकरण (जैसे स्टेथोस्कोप) प्रदान किए जाते हैं। टीम अरमान को तत्काल श्री सत्य साईं नारायण अस्पताल, नया रायपुर लेकर गई। विस्तृत जांच हुई और रिपोर्ट ने माता-पिता के पैरों तले ज़मीन खिसका दी। अरमान के दिल में 18 मिमी का छेद था। डॉक्टरों ने बिना देर किए कहा, 'ऑपरेशन जरूरी है।' ईंट-भट्ठे में काम करने वाले पिता रंगनाथ यादव और मां रजनी के सामने सवालों का पहाड़ खड़ा था कि पैसे का इंतजाम कैसे होगा?

बच्चा का स्वास्थ्य, उसका भविष्य कैसा होगा?

लेकिन उस घड़ी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। चिरायु टीम की सलाह पर भरोसा किया और अपने बेटे को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया। जिला प्रशासन द्वारा संचालित प्रोजेक्ट 'धड़कन' के अंतर्गत 28 दिसंबर 2025 को विशेषज्ञ डॉक्टरों की देखरेख में अरमान का जटिल हृदय ऑपरेशन पूरी तरह नि:शुल्क सफलतापूर्वक किया गया। लगातार निगरानी और देखभाल के बाद कुछ ही दिनों में वह डिस्चार्ज होकर घर वापिस आ गया।

आज जब अरमान पिट्ठूल खेलता है, दोस्तों के पीछे भागता है, तो यह विश्वास करना मुश्किल हो जाता है कि सिर्फ एक हफ्ते पहले वह अस्पताल में एक जटिल सर्जरी प्रक्रिया से गुजर रहा था। चिरायु टीम द्वारा लगातार फॉलो-अप किया जा रहा है। डॉक्टरों के अनुसार अरमान की सेहत में उल्लेखनीय सुधार है और वह पूरी तरह स्वस्थ है। उसके चेहरे की मुस्कान आज सिर्फ उसके परिवार की नहीं, पूरे मोहल्ले की खुशी बन गई है।

भावुक होकर रजनी यादव कहती हैं, 'अगर समय पर जांच और ईलाज नहीं मिलता, तो शायद आज मेरा बच्चा मेरे सामने न होता।' वहीं पिता रंगनाथ यादव कहते हैं, 'मेरे पास न पैसा था, न साधन लेकिन प्रोजेक्ट धड़कन ने मेरे बेटे को नई जिंदगी दे दी।' आज अरमान केवल अपने माता-पिता का सहारा नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए आशा, विश्वास और समय पर मिली मदद की ताकत का प्रतीक बन चुका है। रजनी और रंगनाथ, मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और ज़िला प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त करते नहीं थकते।

# मुख्यमंत्री ग्रामीण बस योजना - लंबी दूरी हुई कम, सफर हुआ आसान

**जिस गांव में कभी बस की पहुंच नहीं थी, आज वहां बस के पहुंचते ही खुशियों का माहौल बन जाता है। सड़क पर बस दिखाई देते ही बच्चे हाथ हिलाकर स्वागत करते हैं और हॉर्न की आवाज सुनकर ग्रामीण घरों से बाहर निकल आते हैं। यह दृश्य केवल एक परिवहन सुविधा के आगमन का नहीं, बल्कि गांवों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने की नई शुरुआत का प्रतीक है।**

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की महत्वाकांक्षी मुख्यमंत्री ग्रामीण बस योजना के माध्यम से जशपुर जिले के दूरस्थ और पहाड़ी क्षेत्रों तक अब नियमित बस सेवाएं पहुंच रही हैं। इस योजना ने ग्रामीणों के लिए जिला, नगर एवं विकासखंड मुख्यालयों तक पहुंच को सरल और सुलभ बना दिया है। जहां पहले लोगों को पैदल या निजी साधनों पर निर्भर रहना पड़ता था, वहीं अब सुरक्षित और किफायती सार्वजनिक परिवहन उपलब्ध हो गया है।

इस योजना का लाभ शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशासनिक सेवाओं तक पहुंच में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। स्कूल जाने वाले बच्चे समय पर विद्यालय पहुंच पा रहे हैं, वहीं शासकीय अधिकारी-कर्मचारी भी अपनी ड्यूटी समय पर निभा पा रहे हैं। इससे ग्रामीण जीवन में अनुशासन और सुविधा दोनों का समावेश हुआ है।

जशपुर जिले के बगीचा विकासखंड की सन्ना निवासी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता श्रीमती सुनीता निकुंज बताती हैं कि पहले पहाड़ी क्षेत्र में आंगनबाड़ी केंद्र तक पहुंचना कठिन था। अब ग्रामीण बस सेवा से उनकी समस्या का समाधान हो गया है। इसी प्रकार ग्राम मरंगी निवासी श्री दशरथ भगत एवं अन्य यात्रियों का कहना है कि बस सेवा शुरू होने से बाजार, अस्पताल और अन्य आवश्यक स्थानों तक पहुंच आसान हो गई है।

मुख्यमंत्री ग्रामीण बस योजना न केवल यात्रा को सुगम बना रही है, बल्कि ग्रामीणों को विकास से जोड़ते हुए उनके जीवन स्तर में सकारात्मक परिवर्तन ला रही है। यह योजना जशपुर जैसे दूरस्थ और पहाड़ी जिलों में समग्र विकास की दिशा में एक सशक्त और प्रभावी पहल सिद्ध हो रही है।

# नक्सल मुक्त होता छत्तीसगढ़ माओवादी कमांडर उधम सिंह ढेर..

## ओडिशा का मलकानगिरी जिला नक्सलमुक्त घोषित

बीजापुर जिले में सुरक्षा बलों को नक्सल विरोधी अभियान के तहत बड़ी सफलता मिली है। सुरक्षा बलों ने छत्तीसगढ़-तेलंगाना सीमा पर हुए एनकाउंटर में नक्सली कमांडर उधम सिंह को मार गिराया है। सुरक्षा बलों ने मौके से एके-47 राइफल और अन्य सामग्री भी बरामद की। उधम सिंह वर्ष 2021 में तर्रेम के टेकलगुड़ेम में हुए हमले में शामिल रहा है, जिसमें 22 जवानों ने वीरगति पाई थी। इसके अलावा कई नक्सली वारदातों का संचालन करता रहा है।

डीवीसीएम उधम सिंह प्लाटून नंबर 30 का कमांडर था और जागूरगुंडा एरिया कमेटी की कमान भी उसी के हाथ में थी। उस पर आठ लाख रुपये का इनाम घोषित था। गुरुवार सुबह करीब साढ़े सात बजे दक्षिण बस्तर के पेद्दागेलूर जंगल क्षेत्र में मुठभेड़ शुरू हुई। डीआरजी और सीआरपीएफ की कोबरा बटालियन ने संयुक्त कार्रवाई में नक्सलियों को चारों ओर से घेर लिया। दोनों ओर से गोलीबारी हुई। मुठभेड़ तरेम थाना क्षेत्र में हुई। सुरक्षा एजेंसियों के अनुसार कुछ अन्य नक्सलियों के आसपास छिपे होने की आशंका है। अभियान तब तक जारी रहेगा, जब तक पूरे क्षेत्र को सुरक्षित नहीं कर लिया जाता। 03 अप्रैल 2021 की घटना में बीजापुर और सुकमा जिले की सीमा पर स्थित टेकलगुड़ेम गांव के पास नक्सलियों ने सुरक्षा बलों पर सुनियोजित हमला किया था। जांच में सामने आया कि करीब 350 से 400 नक्सलियों ने जवानों को निशाना बनाया और उनके हथियार भी लूट लिए। नक्सलियों ने बैरल ग्रेनेड लॉन्चर और स्वचालित हथियारों का इस्तेमाल किया था।

नक्सल विरोधी अभियान के परिणाम देखने को मिल रहे हैं, बीजापुर जिले में 12 नक्सलियों ने एक साथ आत्मसमर्पण किया। इनमें नॉर्थ और साउथ बस्तर में सक्रिय बड़े चेहरे शामिल हैं। इन सभी पर कुल 54 लाख रुपये का इनाम घोषित था। नक्सलियों ने बस्तर आईजी सुंदरराज पी और बीजापुर एसपी जितेंद्र यादव के सामने हथियार डाले।

आंकड़ों के अनुसार एक जनवरी 2024 से अब तक 888 माओवादी हिंसा का रास्ता छोड़कर समाज से जुड़े हैं। इस अवधि में सुरक्षा बलों ने 1163 माओवादियों को गिरफ्तार किया।

दूसरी ओर ओडिशा में भी बड़ी उपलब्धि मिली है। मलकानगिरी जिले को नक्सलमुक्त घोषित कर दिया गया है। 21 लाख रुपये के इनामी माओवादी सुखराम मरकाम ने पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, सुखराम मरकाम प्रतिबंधित सीपीआई माओवादी संगठन की एरिया कमेटी का सदस्य रहा है। उसने एक एसएलआर राइफल, गोला बारूद और अन्य सामग्री भी पुलिस को सौंपी।

मलकानगिरी कभी माओवादियों का मजबूत गढ़ माना जाता था। अब लगातार अभियानों और आत्मसमर्पण नीति के चलते हालात बदले हैं। इससे पहले पड़ोसी नबरंगपुर जिला भी माओवादी मुक्त घोषित हुआ था।

# महतारी वंदन योजना बनी महिला सशक्तिकरण की मजबूत आधारशिला

## ग्रीसलता साहू ने सिलाई कार्य से बढ़ाया आत्मनिर्भरता की ओर कदम

**छत्तीसगढ़ शासन की महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संचालित महतारी वंदन योजना प्रदेश की महिलाओं के जीवन में आत्मनिर्भरता और आर्थिक स्थिरता का मजबूत आधार बनकर उभर रही है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व और महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े के मार्गदर्शन में लागू इस योजना से कोंडागांव जिले के माकड़ी विकासखंड अंतर्गत ग्राम बड़गांव निवासी ग्रीसलता साहू को आर्थिक संबल मिला है।**

ग्रीसलता साहू ने महतारी वंदन योजना के अंतर्गत प्रतिमाह प्राप्त होने वाली सहायता राशि का रचनात्मक उपयोग करते हुए घर पर ही कपड़ा सिलाई का कार्य प्रारंभ किया। उन्होंने योजना की राशि को बचत कर सिलाई मशीन खरीदी और छोटे स्तर पर स्वरोजगार की शुरुआत की, जिससे आज उन्हें नियमित आय प्राप्त हो रही है।

सिलाई कार्य से अर्जित अतिरिक्त आमदनी से परिवार की आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। इससे बच्चों के बेहतर पालन-पोषण के साथ-साथ घरेलू जरूरतों की पूर्ति सहज हुई है और पति पर पड़ने वाला आर्थिक दबाव भी कम हुआ है।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा संचालित महतारी वंदन योजना महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने, उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने तथा महिला सशक्तिकरण को सुदृढ़ करने की दिशा में एक प्रभावी और दूरदर्शी पहल सिद्ध हो रही है, जो प्रदेशभर के परिवारों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रही है।

# गुणवत्तापूर्ण समाज से ही राष्ट्र बलशाली बनता है - डॉ. मोहन भागवत

**जऊलके स्थित आर्मस्ट्रांग रोबोटिक्स एंड टेक्नोलॉजी प्राइवेट लिमिटेड में आयोजित शिक्षा संस्थानों के प्रमुखों से स्नेह संवाद कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि 'एक संवेदशील मनुष्य के निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षा की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। गुणवत्तापूर्ण समाज शिक्षा के माध्यम से ही बनता है और ऐसा परिपक्व समाज ही राष्ट्र को बलशाली बनाता है। इसलिए, शिक्षकों को इस पवित्र कार्य को केवल आजीविका के रूप में नहीं, बल्कि आत्मीयता से करना चाहिए'।**

संघ शताब्दी के उपलक्ष्य में आयोजित अनौपचारिक वार्ता कार्यक्रम में पश्चिम महाराष्ट्र प्रांत के संघचालक नाना जाधव और विभाग संघचालक नाना साळुंखे भी उपस्थित रहे। सरसंघचालक जी ने कहा कि 'शिक्षा केवल व्यापार या अर्थव्यवस्था का विषय नहीं है, बल्कि यह छात्रों में मानवता का सृजन करने का प्रयास होता है। शिक्षकों को अपने अंदर के 'गुरु'पन को खोने नहीं देना चाहिए। विद्यालय के प्रत्येक घटक को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता होती है, तथा शिक्षा संस्थानों के प्रमुखों को शिक्षकों में कार्य के प्रति आत्मीयता की भावना उत्पन्न करनी चाहिए'।

उन्होंने अपने प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का उदाहरण देते हुए समझाया कि शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच घनिष्ठ संबंध कितना महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि 'संघ न तो कोई प्रतिक्रिया है, न प्रतिस्पर्धा है और न ही सत्ता का बल है। संघ का उद्देश्य देश को महान बनाना और समाज की एकता को बढ़ाना है। संघ पिछली शताब्दी से ही अनुशासित और लक्ष्य-उन्मुख समाज के निर्माण का प्रयास कर रहा है। संघ को समझने के लिए सभी को एक बार संघ में अवश्य आना चाहिए'।

## संस्कृति ही समाज का स्वभाव

समाज के 80 प्रतिशत लोग अनुकरण के माध्यम से सीखते हैं, यह बताते हुए सरसंघचालक जी ने कहा कि 'यद्यपि हमारे देश में अनेक भाषाएं और संप्रदाय हैं, फिर भी 'संस्कृति' हमारे समाज का स्वभाव होना चाहिए। वल्लभभाई पटेल और सुभाषचंद्र बोस ने देश के प्रति जो समर्पण किया, वही समर्पण भाव आज की पीढ़ी में भी जगाना शिक्षा क्षेत्र का दायित्व है'।

# भगवान बुद्ध के अवशेष देखने उमड़े श्रद्धालु

## प्रदर्शनी के बाद भगवान बुद्ध के पवित्र देवनीमोरी अवशेष भारत वापस लाए गए

भगवान बुद्ध के पवित्र देवनीमोरी अवशेष श्रीलंका से भारत वापस लाए गए। ये अवशेष कोलंबो के गंगारामया मंदिर में एक सप्ताह तक सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए रखे गए थे।

मध्य प्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल और अरुणाचल प्रदेश के उप मुख्यमंत्री चोवना मीन के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधिमंडल, वरिष्ठ बौद्ध भिक्षुओं और अधिकारियों के साथ, पवित्र अवशेषों को वापस लाया गया। अवशेषों को पहली बार अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी के लिए विदेश भेजा गया था। इस अवसर पर श्रीलंका के मंत्रियों और भारत के श्रीलंका में उच्चायुक्त की उपस्थिति में भंडारनायके अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर औपचारिक प्रस्थान समारोह आयोजित किया।

सात दिवसीय प्रदर्शनी के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालु गंगारामया मंदिर में दर्शन के लिए पहुंचे। इस दौरान दस लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने सार्वजनिक दर्शन में भाग लिया। प्रदर्शनी में प्रधानमंत्री, कैबिनेट मंत्री, संसद सदस्य, पूर्व राष्ट्रपति और अन्य गणमान्य व्यक्तियों सहित वरिष्ठ श्रीलंकाई नेताओं ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

प्रदर्शनी का उद्घाटन राष्ट्रपति अनुरा कुमार दिसानायके ने किया था। श्रीलंका सरकार ने इस ऐतिहासिक आध्यात्मिक आयोजन को संभव बनाने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भारत की जनता के प्रति आभार व्यक्त किया। भारत की ओर से उद्घाटन समारोह में गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत और गुजरात के उप मुख्यमंत्री हर्ष सांघवी उपस्थित थे।

प्रदर्शनी के विस्तार के रूप में, 'पवित्र पिपरावा का अनावरण' और 'समकालीन भारत के पवित्र अवशेष और सांस्कृतिक जुड़ाव' नामक विशेष प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया। प्रदर्शनियों में भारत और श्रीलंका के बीच साझा बौद्ध विरासत और सभ्यतागत संबंधों को प्रदर्शित किया गया।

प्रदर्शनी ने वैश्विक बौद्ध विरासत के संरक्षक के रूप में भारत की भूमिका और श्रीलंका के साथ जन-जन और सांस्कृतिक संबंधों को गहरा करने की भारत की निरंतर प्रतिबद्धता को बल दिया है।

# संविधान, लोकतंत्र और सुशासन के रास्ते विकसित छत्तीसगढ़ का निर्माण सरकार का संकल्प : मुख्यमंत्री

लोकतंत्र की मजबूती, संविधान की सर्वोच्चता और विकसित छत्तीसगढ़ के संकल्प के साथ 77वां गणतंत्र दिवस पूरे प्रदेश में हर्षोल्लास, देशभक्ति और गौरवपूर्ण वातावरण में मनाया गया। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने बिलासपुर के पुलिस परेड ग्राउंड में आयोजित गणतंत्र दिवस के मुख्य समारोह में राष्ट्रीय ध्वज फहराया और संयुक्त परेड की सलामी ली। उन्होंने शहीद सैनिकों एवं पुलिस जवानों के परिजनों को सम्मानित किया तथा छत्तीसगढ़ पुलिस बल को राज्य स्थापना की 25वीं वर्षगांठ का पदक देने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री श्री साय ने इस मौके पर प्रदेशवासियों को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भारत का संविधान हमारी लोकतांत्रिक आस्था, समानता और सामाजिक न्याय का मजबूत आधार है। छत्तीसगढ़ महतारी की सेवा, विकास और समृद्धि के लिए राज्य सरकार पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री श्री साय ने अपने गणतंत्र दिवस संदेश में राज्य की उपलब्धियों, जनकल्याणकारी योजनाओं, नक्सल उन्मूलन की दिशा में हुई प्रगति, किसानों-श्रमिकों-महिलाओं के सशक्तीकरण, शिक्षा-स्वास्थ्य-औद्योगिक विकास और सुशासन की विस्तार से जानकारी दी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गणतंत्र दिवस केवल उत्सव का दिन नहीं, बल्कि राष्ट्र के लिए बलिदान देने वाले महापुरुषों और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को स्मरण करने का दिन भी है। उन्होंने संविधान निर्माताओं, विशेषकर बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर को नमन करते हुए कहा कि संविधान सामाजिक समरसता, समान अधिकार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रतीक है। उन्होंने बाबा गुरु घासीदास जी के 'मनखे-मनखे एक समान' के संदेश को संविधान की आत्मा बताया और कहा कि भारतीय गणतंत्र ने ऐसा खुला समाज निर्मित किया है, जहां हर नागरिक राष्ट्र निर्माण में सहभागी बन सकता है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ ने हाल ही

में राज्य स्थापना की रजत जयंती मनाई है। पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी द्वारा गठित इस राज्य ने 25 वर्षों में विकास की सशक्त यात्रा तय की है। उन्होंने बताया कि संविधान के मंदिर- छत्तीसगढ़ विधानसभा के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के करकमलों से संपन्न हुआ। धान की बालियों की डिजाइन और बस्तर-सरगुजा की लोककला से सुसज्जित यह भवन छत्तीसगढ़ी अस्मिता का प्रतीक है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस वर्ष राष्ट्रगीत वंदे मातरम् की 150वीं जयंती राज्यभर में श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाई गई। सुकमा जिले के कोंटा से लेकर मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर के सीतामढ़ी हरचौका तक लोगों ने

सामूहिक रूप से वंदे मातरम् का गायन किया। यह बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय को सच्ची श्रद्धांजलि है।

मुख्यमंत्री ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती और जनजातीय गौरव दिवस के आयोजन का उल्लेख करते हुए कहा कि जनजातीय समाज ने स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक योगदान दिया। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा लोकार्पित शहीद वीर नारायण सिंह जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी डिजिटल संग्रहालय देश का पहला डिजिटल संग्रहालय है, जो आज की पीढ़ी को जनजातीय नायकों के बलिदान से परिचित कराता है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि माओवादी हिंसा लोकतंत्र के लिए गंभीर चुनौती रही है, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में छत्तीसगढ़ ने निर्णायक रणनीति अपनाई है। उन्होंने बताया कि जवानों के अदम्य साहस और सतत अभियानों के परिणामस्वरूप माओवादी हिंसा अब अंतिम चरण में है और मार्च 2026 तक प्रदेश को नक्सलमुक्त करने का लक्ष्य पूर्ण होने जा रहा है। मुख्यमंत्री ने आत्मसमर्पित नक्सलियों के पुनर्वास, बस्तर कैफे जैसी पहलों और नियद नेल्ला नार योजना के माध्यम से प्रभावित क्षेत्रों में विकास कार्यों की जानकारी दी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य बनने के बाद सबसे बड़ी चुनौती अन्नदाता की समृद्धि रही है। आज छत्तीसगढ़ के किसान को धान का देश में सर्वाधिक मूल्य मिल रहा है। उन्होंने बताया कि धान खरीदी 5 लाख मीट्रिक टन से बढ़कर 149 लाख मीट्रिक टन तक पहुंच चुकी है। बीते दो वर्षों में किसानों के खातों में डेढ़ लाख करोड़ रुपए अंतरित किए गए हैं। अटल सिंचाई योजना के तहत 115 लंबित सिंचाई परियोजनाओं को पूर्ण किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने बताया कि प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत प्रदेश में 26 लाख से अधिक आवास स्वीकृत किए गए हैं और प्रतिदिन लगभग 2 हजार आवासों का निर्माण हो रहा है, जो देश में सर्वाधिक है। उन्होंने कहा कि राज्य विद्युत उत्पादन में देश में दूसरे स्थान पर है और शीघ्र ही प्रथम स्थान की ओर अग्रसर है। सौर ऊर्जा, गैस आधारित परियोजनाओं और शून्य कार्बन उत्सर्जन लक्ष्य पर तेजी से काम हो रहा है।

मुख्यमंत्री ने महतारी वंदन योजना के तहत 70 लाख महिलाओं को प्रतिमाह 1,000 रुपए की सम्मान राशि प्रदान किए जाने की जानकारी दी। अब तक 14,948 करोड़ रुपए की राशि वितरित की जा चुकी है। उन्होंने श्रमिकों के लिए ईएसआई, श्रम संहिताओं और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन की बात कही।

मुख्यमंत्री ने बताया कि युक्तियुक्तकरण से शिक्षकों की कमी दूर की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत स्थानीय भाषाओं में शिक्षा, 9 हजार स्मार्ट क्लास और 22 हजार कंप्यूटर की व्यवस्था की जा रही है। स्वास्थ्य शिक्षा के क्षेत्र में नए मेडिकल कालेजों की स्वीकृति से अब इनकी संख्या बढ़कर 15 हो गई है। बिलासपुर में मल्टी सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल और हिंदी में एमबीबीएस की पढ़ाई शुरू की गई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि नई औद्योगिक नीति के तहत अब तक 7.83 लाख करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। नवा रायपुर को आईटी, एआई, फार्मा और मेडिकल हब के रूप में विकसित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भविष्य एआई का है और छत्तीसगढ़ इसकी धुरी बनेगा।

मुख्यमंत्री ने रामलला दर्शन योजना, मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना, बस्तर पंडुम, चित्रकोट जलप्रपात, मैनपाट, सरगुजा और जशपुर पर्यटन के विकास का उल्लेख किया। उन्होंने ई-ऑफिस, जेम पोर्टल, बायोमेट्रिक अटेंडेंस और डिजिटल गवर्नेंस के माध्यम से सुशासन की मजबूती पर बल दिया।

समारोह में स्कूली बच्चों द्वारा राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। विभिन्न शासकीय विभागों द्वारा योजनाओं पर आधारित आकर्षक झांकियां निकाली गईं, जिन्होंने प्रदेश की विकास यात्रा को जीवंत रूप में प्रदर्शित किया।

## विकसित छत्तीसगढ़ का आह्वान

मुख्यमंत्री ने स्व. लक्ष्मण मस्तूरिया जी की कविता की पंक्तियों के माध्यम से जनभागीदारी का आह्वान करते हुए कहा कि विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण में सभी की सहभागिता आवश्यक है। उन्होंने अंत में प्रदेशवासियों को गणतंत्र दिवस की बधाई और शुभकामनाएं दी।

# जिन हाथों ने कभी बंदूक थामकर हिंसा को अंजाम दिया, वही प्रशिक्षण लेकर सीख रहे हुनर

अगर कुछ कर गुजरने का जज्बा मन में हो तो जीवन में हर काम आसान हो जाता है। इस कथन को आत्मसमर्पित माओवादियों ने चरितार्थ किया है। जिन हाथों ने कभी बंदूक थामकर हिंसा की राह अख्तियार किया था, आज उन्हीं हाथों को राज्य की नक्सल पुनर्वास नीति के तहत कुशल और दक्ष बनाने की कवायद जिला प्रशासन द्वारा की जा रही है। शासन की मंशानुसार ग्राम चौगेल (मुल्ला) कैंप में प्रशिक्षण देकर 'हिंसा से हुनर' की ओर लौटे माओवादियों को नया जीवनदान मिल रहा है।

## आजीविका मूलक गतिविधियों का प्रशिक्षण

कभी माओवाद गतिविधियों में संलिप्त रहे युवक-युवतियों को अब ड्राइविंग, सिलाई, काष्ठशिल्प कला, सहायक इलेक्ट्रिशियन जैसे विभिन्न ट्रेड में सतत् प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिससे वे समाज की मुख्य धारा में लौटने के बाद आजीविका मूलक गतिविधियों में कुशल होकर बेहतर ढंग से सम्मान पूर्वक जीवन निर्वाह कर सके।

## चौगेल कैंप परिसर बना कौशलगढ़

वर्षों से लाल आतंक के साए में हिंसा का दंश झेल रहा बस्तर संभाग अब विकास की ओर शनैः-शनैः आगे बढ़ रहा है और माओवाद का दायरा धीरे-धीरे सिमटता जा रहा है। छत्तीसगढ़ सहित देश को माओवाद से मुक्ति दिलाने केंद्र सरकार के संकल्प को पूरा करने प्रदेश सरकार हरसंभव प्रयास कर रही है। वहीं हथियार उठाने वालों को भविष्य गढ़ने का सुनहरा अवसर भी सरकार द्वारा दिया जा रहा है। आत्मसमर्पित/पीड़ित नक्सल पुनर्वास नीति-2025 के अंतर्गत उन्हें विभिन्न सृजनात्मक और रोजगारमूलक गतिविधियों के तहत प्रशिक्षण दिया जा रहा है। भानुप्रतापपुर विकासखंड से लगे ग्राम चौगेल (मुल्ला) का बीएसएफ कैम्प परिसर 'कौशलगढ़' बन गया है, जहां समाज की मुख्यधारा में लौटे 40 आत्मसमर्पित माओवादियों को अलग-अलग पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षित किया जा रहा है, साथ ही उन्हें शिक्षित भी किया जा रहा है। आवश्यकतानुसार कक्षा पहली से आठवीं तक के पाठ्यक्रमों का नियमित अध्ययन कराया जा रहा है, जिसमें रूचि लेते हुए सभी आत्मसमर्पित माओवादी अपने भविष्य को पूरी शिद्दत से गढ़ने में संलग्न हैं। 20-20 का बैच बनाकर उन्हें हुनरमंद बनाने के सतत प्रयास किए जा रहे हैं।

## ड्राइविंग का शौक अब पूरा हो रहा- मनहेर तारम

चारपहिया वाहन चालन का प्रशिक्षण ले रहे आत्मसमर्पित माओवादी 40 वर्षीय श्री मनहेर तारम ने बताया कि पिछले दो सप्ताह से उन्हें ड्रायविंग की ट्रेनिंग दी जा रही है, जिसे वे पूरी रूचि के साथ सीख रहे हैं। ट्रेनर द्वारा स्टेयरिंग थामने से लेकर क्लच, ब्रेक व एक्सिलरेटर का प्रयोग करना सिखाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि ड्रायविंग सीखने की चाहत अब पूरी हो रही है। इसके अलावा सिलाई और काष्ठशिल्प का प्रशिक्षण कैम्प में दिया जा रहा है। इसी तरह श्री नरसिंह नेताम ने बताया कि वह भी फोरव्हीलर की ड्रायविंग में अपना हाथ आजमा रहे हैं तथा यहां आकर ऐसी गतिविधियों से जुड़ रहे हैं, जिससे आगे का जीवन बेहतर हो सके। 19 साल के सुकदू पद्दा ने बताया कि यहां पिछले तीन महीने से ट्रेनिंग ले रहे हैं और खुद को आजीविका मूलक कार्यों से जोड़ रहे हैं, जबकि वह निरक्षर है। वहीं 19 वर्ष की कु. काजल वेड़दा ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का अनुभव साझा करते हुए कहा कि यहां आकर अलग-अलग पाठ्यक्रमों में नियमित रूप से प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उन्हें बचपन से कपड़ों की सिलाई करने की इच्छा थी, यहां आकर वह भी पूरी हो रही है। वहीं शिक्षकां के द्वारा प्राथमिक शिक्षा का भी वह लाभ ले रही हैं। इसी तरह कैंप में रह रहे जगदेव कोमरा, राजू नुरूटी, बीरसिंह मण्डावी, मैनू नेगी, सनऊ गावड़े, मानकी नेताम, सामको नुरूटी, उंगी कोर्राम, रमोती कवाची, मानकेर हुपेंडी, डाली सलाम, गेंजो हुपेंडी सहित सभी आत्मसमर्पित माओवादी अपनी रूचि अनुसार ड्राईविंग, काष्ठशिल्प कला, सिलाई मशीन तथा सहायक इलेक्ट्रिशियन ट्रेड में बेहतर ढंग से प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा उनका नियमितरूप से स्वास्थ्य परीक्षण कर आवश्यकतानुसार दवाईयां दी जाती हैं। कैम्प में मनोरंजनात्मक गतिविधियां कैरम, वाद्य यंत्र, विभिन्न प्रकार के खेल भी आयोजित किया जाता है।

पुनर्वास कैंप के नोडल अधिकारी श्री विनोद अहिरवार ने बताया कि कलेक्टर उत्तर बस्तर कांकेर के निर्देशानुसार आत्मसमर्पित 40 माओवादियों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ते हुए विभिन्न पाठ्यक्रमों में 20-20 के बैच में चौगेल (मुल्ला) कैंप में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं और सभी को बेहतर ढंग से प्रशिक्षित किया जा रहा है। भविष्य में मशरूम उत्पादन, बागवानी सहित विभिन्न सृजनात्मक एवं स्वरोजगार मूलक पाठ्यक्रमों में जल्द ही प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस तरह आत्मसमर्पण कर मुख्यधारा में लौटे माओवादियों को राज्य शासन द्वारा अवसर देकर उन्हें आत्मनिर्भर तथा स्वरोजगारमूलक सकारात्मक कार्यों से जोड़ा जा रहा है, जिससे उन्हें सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत करने का मौका मिल सके।

(तारा शंकर सहायक, संचालक जनसंपर्क)

# पहाड़ों पर विराजे माँ बम्लेश्वरी

नागपुर से बिलासुपर के बीच पर्वत श्रृंखला में फैल पर्वत के मध्य सर्वोच्च शिखर पर माँ बम्लेश्वरी देवी का विशाल मंदिर स्थित है। डोंगरगढ़ की पहाड़ी पर स्थित शक्तिरूपा मां बम्लेश्वरी देवी का विख्यात मंदिर श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र है। मान्यता है कि मां बम्लेश्वरी देवी से भक्तों द्वारा मांगी गई मनोकामना पूर्ण होती है। बड़ी बम्लेश्वरी के समतल पर स्थित मंदिर छोटी बम्लेश्वरी के नाम से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि यह मां बमलेश्वरी की छोटी बहन है। इस पर्वत श्रृंखला की प्राकृतिक सुंदरता मनमोहक है। मंदिर चारों ओर हरे भरे वनों पहाड़ियों, छोटे-बड़े तालाबों से घिरा हुआ है। पहाड़ी के नीचे कामकंदला तालाब है। मां बम्लेश्वरी के मंदिर में प्रति वर्ष चैत्र नवरात्र एवं क्वांर नवरात्र के समय दो बार भव्य मेले का आयोजन किया जाता है। जिसमें लाखों की संख्या में भक्त एवं दर्शनार्थी पैदल एवं अन्य माध्यमों से पहुंचते हैं। डोंगरगढ़ स्थित मां बम्लेश्वरी मंदिर पर जाने के लिए सीढ़ियों के अलावा रोपवे की सुविधा भी है। माँ बम्लेश्वरी देवी का मंदिर 1610 फीट ऊंची पहाड़ी की चोटी पर स्थित है। देश के विभिन्न राज्यों एवं विदेशों से भी भक्त पर्वत पर बने लगभग 1000 सीढ़ियों की कठिन चढ़ाई कर माता के दर्शन के लिए आते है। इसके अलावा रोपेवे एक अतिरिक्त आकर्षण का केन्द्र है और छत्तीसगढ़ में एकमात्र यात्री रोपेवे है। प्राचीन काल से ही डोंगरगढ़ दर्शनार्थियों की आध्यात्मिक धार्मिक भावनाओं का केन्द्र है। माँ बम्लेश्वरी को बमलाई दाई या दाई बमलाई, माँ बगलामुखी के नाम से भी जाना जाता है।

डोंगरगढ़ छत्तीसगढ़ राज्य के राजनांदगांव जिले का एक शहर और नगर पालिका है, जो माँ बम्लेश्वरी मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। डोंगरगढ़ को धर्मनगरी के नाम से भी जाना जाता है। डोंगरगढ़ छत्तीसगढ़ का एक प्रमुख तीर्थ स्थल हैं। डोंगरगढ़ राजधानी रायपुर से 106 किलोमीटर एवं जिला मुख्यालय राजनांदगांव से 35 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है तथा मुंबई-हावड़ा रेल मार्ग के अंतर्गत आता है। हावड़ा-मुंबई मुख्य रेल मार्ग

पर डोंगरगढ़ रेलवे जंक्शन है। डोंगर का अर्थ पहाड़ और गढ़ का अर्थ दुर्ग होता है, अर्थात डोंगरगढ़ का अर्थ पहाड़ पर दुर्ग है। डोंगरगढ़ को प्राचीन काल में कामाख्या नगरी, कामावती नगर एवं डुंगराज्य नगर के नाम से जाना जाता था।

## आवागमन सुविधा-

डोंगरगढ़ नगर मुम्बई-कलकत्ता (व्हाया-नागपुर) के मध्य रेल्वे लाईन एवं हवाई अड्डा पर महाराष्ट्र की उप राजधानी नागपुर (आरेंज सीटी) से 200 किलो मीटर दूर एवं छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में रेल्वे लाईन एवं हवाई अड्डे से 100 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। डोंगरगढ़ पहुंचने का सुगम माध्यम रेल्वे मार्ग है। कलकत्ता- मुम्बई नेशनल हाईवे मार्ग क्रमांक 6 पर स्थित पश्चिम दिशा की ओर से ग्राम चिचोला से 17 किलोमीटर एवं पूर्व दिशा की ओर ग्राम तुमड़ीबोड़ से 22 किलोमीटर की दूरी पर डोंगरगढ़ नगर स्थित है।

## माँ बम्लेश्वरी मंदिर स्थापना से संबंधित पौराणिक कथाएं-

माँ बम्लेश्वरी मंदिर स्थापना से जुड़ी 2200 वर्ष पूर्व प्राचीन कथा अनुसार कामख्या नगर में राजा वीरसेन का शासन था। राजा वीरसेन की कोई संतान नहीं होने से

उन्हें अपने उत्तराधिकारी की चिंता सताने लगी थी। राजा वीरसेन ने संतान प्राप्ति के लिए मां भगवती दुर्गा और शिवजी की आराधना शुरू की। एक साल के बाद मां भगवती दुर्गा और शिवजी की कृपा से राजा वीरसेन को पुत्र की प्राप्ति हुई। राजा ने अपने पुत्र का नाम मदनसेन रखा। मां भगवती दुर्गा और भगवान शिवजी की कृपा को व्यक्त करने के लिए राजा वीरसेन ने डोंगरगढ़ पहाड़ी पर मंदिर बनवाया, जिसे माँ बम्लेश्वरी मंदिर कहा जाता है। मदनसेन भी अपने पिता वीरसेन की तरह एक प्रजा सेवक शासक थे। राजा मदनसेन के बाद उनके पुत्र कामसेन राजा बने। कामसेन के नाम पर कामख्या नगरी का नाम कामावती रखा गया।

## कामकंदला व माधवानल की प्रेम कथा-

आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व जब उज्जैन में राजा विक्रमादित्य का राज्य था, तब डोंगरगढ़ नगर कामावती नगर के नाम से जाना जाता था। उस समय राजा वीरसेन के शासन के बाद मदनसेन के पुत्र कामसेन कामावती राज्य के राजा थे। कामावती नगर अपने संगीत और नृत्य कला के लिए प्रसिद्ध था। प्राचीन इतिहास के अनुसार राजा कामसेन के दरबार में अति रूपवती एवं नृत्यकला में प्रवीण नृत्यांगना कामकंदला व अलौकिक संगीतग्य व मधुर गायक माधवानल कामावती राज्य की शोभा थे। माधवानल के संगीत में विशेषज्ञता का अंदाजा इस बात से लगया जा सकता है कि एक बार राजा के दरबार में कामकंदला के नृत्य का आयोजन हुआ, लेकिन ताल व सुर बिगडने़ से माधवानल ने कामकंदला के पैर की एक पायल में नग न होने व मृदंग बजाने वाले का एक अंगूठा नकली यानी मोम का होना जैसी गलती निकाली। इससे राजा कामसेन उनकी संगीत के प्रति विशेषज्ञता से बहुत प्रभावित हुए। कामकंदला और माधवानल के मध्य अति प्रेम था। इन दोनों की ख्याति दूर-दूर तक विख्यात थी। एक बार कामावती राज्य के वार्षिक उत्सव में माधवानल और कामकंदला दोनों ने नृत्य व गायन प्रस्तुत किया। माधवानल के संगीत व गायन से अति प्रसन्न होकर राजा कामसेन ने माधवानल को अपने आभूषण भेंट कर दिए। नृत्य के दौरान कामकंदला माधवानल के स्थान पर आ बैठे भौरें को स्थन कंचुकी द्वारा श्वास छोड़ कर हवा में उड़ा दिया। जिसे दरबार में बैठे अन्य दरबारी समझ न सके। कामकंदला के इस अलौकिक नृत्यकला से मुग्ध होकर राजा कामसेन द्वारा दिए आभूषणों को माधवानल ने कामकंदला को भरे राज दरबार में ही समर्पित कर दिया। राजा कामसेन ने इसे अपना व राज दरबार का अपमान मानकर माधवानल को राज्य से निष्काषित कर दिया। लेकिन माधवनल राज्य से बाहर न जाकर डोंगरगढ़ की पहाडियों की एक गुफा में छुपे रहे। इस घटना से कामकन्दला और माधवनल के बीच प्रेम और बढ़ गया। दोनों छिपकर मिलने लगे। वहीं दूसरी ओर राजा कामसेन का पुत्र मदनसेन भी कामकन्दला से प्रेम करता था। भय के कारण कामकंदला, मदनसेन से केवल प्रेम का नाटक कर रही थी। लेकिन प्रेम का झूठा नाटक ज्यादा दिनों तक छुप न सका और सत्य का पता चलने पर राजा कामसेन के पुत्र मदनसेन ने कामकंदला पर राजद्रोह का आरोप लगाकर बंदी बना लिया।

माधवानल इस अपमान से दुखी होकर उज्जैन के राजा विक्रमादित्य के राज दरबार में पहुंचकर पहुंचे। वहां माधवानल ने राजा विक्रमादित्य को अपने संगीत व गायन कला से प्रसन्न कर दिया। अति प्रसन्न होकर राजा विक्रमादित्य ने माधवानल से मनचाहा वर मांगने कहा। जिस पर माधवानल ने कामावती राज्य में नृत्यागना कामकंदला को प्रदान करने की इच्छा प्रगट की। राजा विक्रमादित्य ने माधवानल को दिये अपने वचन को निभाने के लिए कामावती नगरी पर आक्रमण करना पड़ा। उज्जैन राज्य और कामावती राज्य के बीच भंयकर युद्ध हुआ। युद्ध में विजय न प्राप्त होते देखकर राजा विक्रमादित्य ने अपनी अदृश्य शक्ति अगिया बैताल का प्रयोग कर राजा कामसेन के पुत्र मदनसेन का सिर काट दिया। तब राजा कामसेन ने अपने राज्य की अधिधात्री देवी मां भगवती देवी का आह्वान किया। अपने प्रिय भक्त के आह्वान पर मां भगवती युद्ध स्थल पर प्रगट हो राजा विक्रमादित्य की सेना का संहार करने लगी। यह देखकर राजा विक्रमादित्य ने अपने इष्ट देव भगवान शिव का आह्वान किया। राजा विक्रमादित्य के आह्वान पर शिवजी तत्काल रणभूमि में प्रगट हो गए। रणभूमि में प्रगट होते ही शिवजी की नजर मां भगवती पर पड़ी त्यों

ही भगवान शिव अपने वाहन नंदी से उतरकर मां भगवती के समक्ष आ गये और कहा कि हे मां जिनके पुत्र सामर्थवान हो उस माता को रणभूमि में आने का कष्ट उठाने की क्या जरूरत है। ऐसा कहकर भगवान शिव ने मां भगवती के रौद्र रूप को शांत कर राजा विक्रमादित्य एवं राजा कामसेन के मध्य संधि कराकर राजा कामसेन के पुत्र मदनसेन को जीवनदान प्रदान कर किया और मां भगवती के साथ शिवजी अपने लोक को विदा हुए।

युद्ध की समाप्ति के बाद राजा विक्रमादित्य ने कामकंदला और माधवानल के प्रेम की परीक्षा लेनी चाही। उन्होंने कामकंदला को युद्ध में माधवानल के मारे जाने की झूठी सूचना पहुंचा दी। कामकंदला इस सूचना से बहुत आहत हो गई और पहाड़ी के नीचे स्थित तालाब में डूब कर अपने प्राण दे दिए। इस तालाब को आज कामकंदला तालाब के नाम से जाना जाता है। कामकंदला की मृत्यु की सूचना माधवानल को मिलने पर उन्होंने भी अपने प्राण त्याग दिए। कामकंदला और माधवानल के मृत्यु होने पर राजा विक्रमादित्य को अपने इस कृत्य पर बहुत पश्चाताप हुआ। उन्होंने पहाड़ी की ऊंची चोटी पर माँ भगवती का आह्वान किया। माँ भगवती के प्रकट नहीं होने पर उन्होंने अपनी तलवार से अपने सिर धड़ से अलग करने का प्रयास किया। राजा विक्रयादित्य की भक्त से प्रसन्न होकर माँ भगवती प्रकट हुई और राजा विक्रमादित्य को अपने प्राण त्यागने से रोका। माँ भगवती से राजा विक्रयादित्य ने कामकंदला और माधवानल को पुर्नजीवित करने का आग्रह किया। माँ भगवती के आशीर्वाद से कामकंदला और माधवानल को पुन: जीवनदान मिला। राजा विक्रमादित्य ने माँ भगवती से यहां विराजमान होकर भक्तों की मनोकामना पूर्ण करने का आग्रह किया और तब से माँ भगवती डोंगरगढ़ में माँ बम्लेश्वरी देवी के रूप में विराजमान होकर भक्तों की मनोकामना पूर्ण कर रही है। राजा विक्रमादित्य व राजा कामसेन के मध्य हुए इस युद्ध का विस्तृत वर्णन लक्ष्मीवेकटेंश्वर स्टीम प्रेस कल्याण-मुंबई द्वारा प्रकाशित 'माधवानल कामकंधला नामक पुस्तक में वर्णित है।

धरती पर हो रहे परिर्वतन की चपेट में आकर कामावती राज्य तहस-नहस हो रहा था एवं उसके स्थान पर चारों ओर पर्वत श्रृंखला से घिरे पर्वत के मध्य ताल कटोरे से सदृश्य स्थल स्वरूप के मध्य सर्वोच्च पर्वत के सर्वोच्च शिखर पर एवं पर्वत की तलहटी पर कामावती राज्य की अधिधात्री देवी मां बम्लेश्वरी देवी की प्रतिमा स्वविराजित प्रगट हो गई। धरती का विनाशकारी परिर्वतन मां भगवती की ऊपर मंदिर एवं नीचे मंदिर की प्रतिमाओं को छू तक नहीं पाया। जिसने समस्त कामावती राज्य को अपने काल के आगोश में समा लिया था। कामावती राज्य के अवशेष पर्वत के चारों ओर यत्र-तत्र बिखरे हुये दिखाई देते हैं।

# राउडी लुक, दमदार एक्शन और इमोशन का तड़का

## 69 साल में फुल एक्शन मोड में अनिल कपूर

69 की उम्र में भी दिग्गज एक्टर अनिल कपूर दर्शकों के बीच उतने ही लोकप्रिय हैं। उनकी लगभग हर फिल्म को दर्शकों का भरपूर प्रेम और समर्थन मिलता है। हाल ही में फिल्म 'वॉर-2' में दमदार एक्शन के बाद अब अनिल कपूर अपनी नई फिल्म 'सूबेदार' में भी जबरदस्त एक्शन और गंभीर अंदाज में नजर आने वाले हैं। फिल्म में उनका सशक्त और प्रभावशाली लुक उन्हें नई पीढ़ी के अभिनेताओं के बीच भी अलग पहचान देता दिखाई दे रहा है।

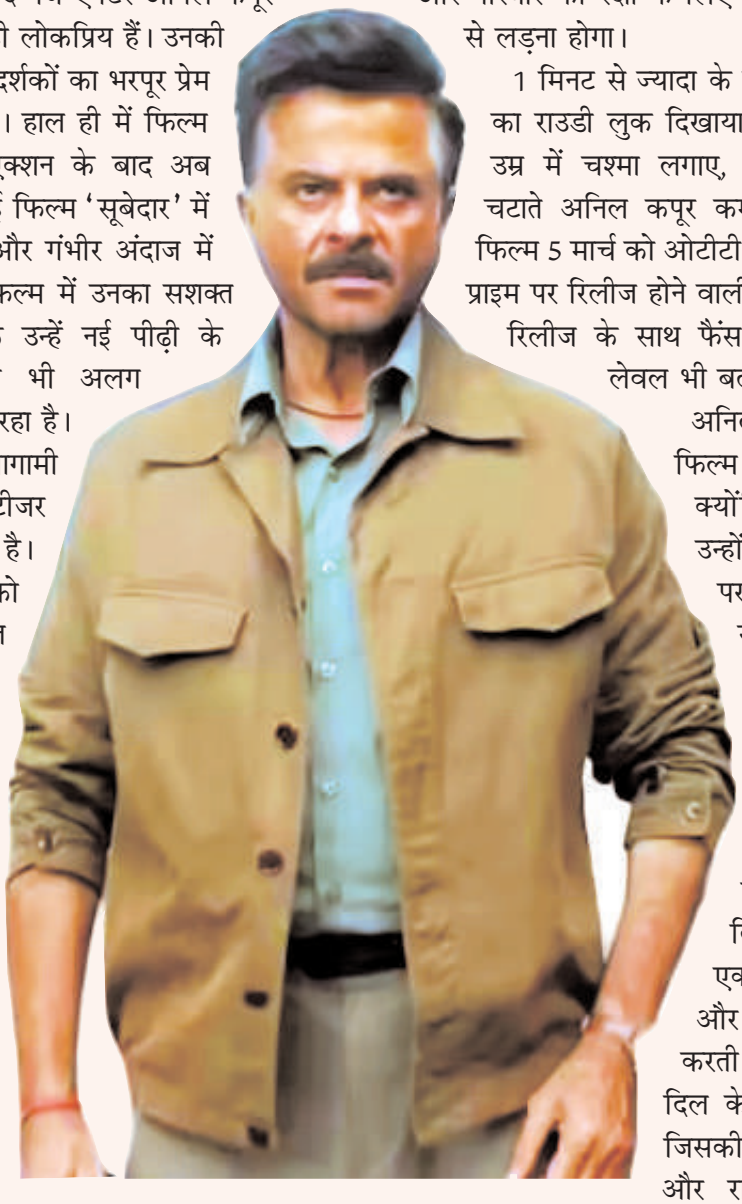

अनिल कपूर की आगामी फिल्म 'सूबेदार' का टीजर रिलीज कर दिया गया है। यह फिल्म 5 मार्च को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार है। एक्शन और ड्रामा से भरी 'सूबेदार' कई भावनाओं और पारिवारिक - सामाजिक परेशानियों से जूझते एक शख्स की कहानी है, जो सैनिक होते हुए भी जिंदगी में आई चुनौतियों से लड़ने के लिए पूरी जान लगा देता है।

'सूबेदार' अर्जुन मौर्य की कहानी है जो एक आम नागरिक के रूप में जीवन की चुनौतियों से जूझते हैं, अपनी बेटी के साथ तनावपूर्ण रिश्ते को संभालते हैं और सामाजिक कुप्रथाओं का सामना करते हैं। कभी देश के लिए लड़ने वाले सैनिक रहे सूबेदार को अब अपने घर और परिवार की रक्षा के लिए अपने कई दुश्मनों से लड़ना होगा।

1 मिनट से ज्यादा के टीजर में अभिनेता का राउडी लुक दिखाया गया है। 69 की उम्र में चश्मा लगाए, दुश्मनों को धूल चटाते अनिल कपूर कमाल लग रहे हैं। फिल्म 5 मार्च को ओटीटी प्लेटफॉर्म अमेजन प्राइम पर रिलीज होने वाली है और टीजर के रिलीज के साथ फैंस का एक्साइटमेंट लेवल भी बढ़ चुका है।

अनिल कपूर के लिए फिल्म 'सूबेदार' खास है क्योंकि बीते साल उन्होंने अपने जन्मदिन पर पोस्ट रिलीज के साथ फिल्म के बारे में पहली बार जानकारी दी थी। अभिनेता का कहना था कि ये फिल्म सिर्फ एक्शन को नहीं दिखाती, बल्कि एक परिवार के संघर्ष और चुनौतियों को पेश करती है। ये फिल्म मेरे दिल के बहुत करीब है, जिसकी शूटिंग उत्तर प्रदेश और राजस्थान के कई इलाकों में होने वाली है। बता दें कि फिल्म में बतौर लीड भूमिका निभाने के अलावा अभिनेता ने फिल्म को प्रोड्यूस भी किया है। फिल्म की कहानी सुरेश त्रिवेणी और प्रज्वल चंद्रशेखर ने लिखी है, जबकि डायरेक्शन सुरेश त्रिवेणी ने किया है।

# 'हेरा फेरी 3' पर फिर छाए संकट के बादल

'हेरा फेरी' फ्रेंचाइजी को लगता है कि सचमुच किसी की नजर लग चुकी है. पिछले 10 सालों से इसके तीसरे पार्ट को बनाने की कोशिश हो रही है, लेकिन कुछ ना कुछ कारण से ये कहीं अटक जाती है. डायरेक्टर, एक्टर से लेकर फिल्म के राइट्स पर पंगा हो चुका है. अब साउथ के प्रोड्यूसर ने 'हेरा फेरी' के ओरिजिनल राइट्स होने का दावा पेश किया है. ये मामला कोर्ट तक पहुंच गया है.

## क्यों दोबारा अटकी 'हेरा फेरी 3'?

HT की रिपोर्ट अनुसार, सेवन आर्ट्स इंटरनेशनल नाम की एक साउथ फिल्म प्रोडक्शन कंपनी ने मद्रास हाई कोर्ट में 'हेरा फेरी' के प्रोड्यूसर फिरोज नाडियाडवाला के खिलाफ केस किया है. उनका दावा है कि फिरोज नहीं, बल्कि उनके पास इस फ्रेंचाइजी के कॉपीराइट हैं. गुरुवार को बार एंड बेंच की रिपोर्ट में बताया गया कि साउथ प्रोड्यूसर ने कोर्ट में याचिका दायर की है, जिसमें वो बताते हैं कि फिरोज नाडियाडवाला के पास सिर्फ साल 2000 में आई 'हेरा फेरी' बनाने के राइट्स थे.

'हेरा फेरी' 1989 में आई मलयालम फिल्म 'रामजी राव स्पीकिंग' का ऑफिशियल रीमेक थी जिसे प्रियदर्शन ने बनाया था. प्रोड्यूसर ने कहा कि नाडियाडवाला ने बिना राइट्स 'हेरा फेरी' का सीक्वल बनाया जो गलत था, और अब इस फ्रेंचाइजी के राइट्स अक्षय कुमार की प्रोडक्शन कंपनी 'केप ऑफ गुड फिल्म्स' को बेच दिए. इस पूरे मुद्दे पर सेवन आर्ट्स इंटरनेशनल के मैनेजिंग डायरेक्टर जीपी विजयकुमार ने HT से बातचीत की.

उन्होंने कहा, 'मैंने 2022 में आदित्य फिल्म्स, जो रामजी राव स्पीकिंग के ओरिजिनल प्रोड्यूसर्स हैं, उनसे हेरा फेरी फ्रैंचाइजी के पूरे राइट्स खरीद लिए थे. उन्होंने मुझे बताया था कि फिरोज नाडियाडवाला को सिर्फ इस फिल्म का एक हिंदी वर्जन बनाने का अधिकार दिया गया था. लेकिन उन्होंने सीक्वल भी बना दिया, जो 2006 में रिलीज हुआ. फिरोज नाडियाडवाला को

सीक्वल या प्रीक्वल बनाने या किरदारों को इस्तेमाल करने का कोई अधिकार नहीं है।'

## क्या है 'हेरा फेरी 3' के राइट्स का मामला?

जब उनसे पूछा गया कि उन्होंने 'फिर हेरा फेरी' के दौरान कोई एक्शन क्यों नहीं लिया, तो उन्होंने कहा- पहली फिल्म प्रियदर्शन ने बनाई थी, जो हमारे बहुत करीबी हैं. दूसरी फिल्म नीरज वोहरा ने बनाई. उस समय कॉपीराइट वाले लोगों को पता नहीं चला कि क्या हो रहा है. ओरिजिनल प्रोड्यूसर और मुझे बहुत बाद में पता चला कि नाडियाडवाला ने धोखाधड़ी की है और नियम तोड़े हैं।

'उस वक्त हमने सोचा कि जो हो गया, सो हो गया. अब हम अगली हिंदी फिल्म खुद बनाएंगे. हमने अक्षय कुमार से बात की उसी के लिए. तभी पता चला कि नाडियाडवाला ने अक्षय की प्रोडक्शन कंपनी को राइट्स बेच दिए हैं. हमने नाडियाडवाला को लीगल नोटिस भेजा कि जो चीज आपकी नहीं थी, उसे फिर आपने कैसे बेच दिया? मेरे पास कोई और रास्ता नहीं बचा, इसलिए कोर्ट जाना पड़ा।'

फिल्म 'हेरा फेरी 3' का प्रोडक्शन अभी तक शुरू नहीं हुआ है. इसकी जानकारी खुद परेश रावल ने दी थी. उन्होंने खुलासा किया था कि फिल्म की शूटिंग फरवरी या मार्च के दौरान शुरू की जाएगी. हालांकि अब फिल्म का क्या भविष्य होगा, इसका इंतजार करना पड़ेगा।

# भारत ने छठी बार जीता अंडर-19 विश्वकप का खिताब

भारत ने अंडर-19 विश्वकप का खिताब जीत लिया है। फाइनल में टीम इंडिया ने इंग्लैंड को 100 रन से हराया। यह टीम इंडिया का रिकॉर्ड छठा खिताब है। इससे पहले भारत ने 2000, 2008, 2012, 2018 और 2022 में अंडर-19 विश्व कप खिताब पर कब्जा जमाया था। भारत ने इंग्लैंड के सामने 412 रन का लक्ष्य रखा था। जवाब में इंग्लिश टीम 40.2 ओवर में 311 रन रन पर सिमट गई। टीम इंडिया के लिए वैभव सूर्यवंशी फाइनल के सुपरस्टार रहे। उन्होंने 80 गेंद में 175 रन की ताबड़तोड़ पारी खेली। वहीं, इंग्लैंड की ओर से कैलब फाल्कनर ने शतक जड़ा, लेकिन टीम को नहीं जिता पाए। फाल्कनर ने 67 गेंद पर 115 रन की पारी खेली।

## भारत ने की रिकॉर्ड्स की बरसात

100 रन से जीत अंडर 19 विश्व कप फाइनल में रनों के अंतर से सबसे बड़ी जीत है। इससे पहले यह रिकॉर्ड ऑस्ट्रेलिया के नाम था। उन्होंने 2024 में भारत को 79 रन से हराया था।

वहीं, 411 रन का स्कोर अंडर-19 विश्व कप और अंडर-19 विश्व कप फाइनल का सबसे बड़ा स्कोर रहा। अंडर-19 विश्व कप में सबसे बड़े स्कोर के मामले में भारत ने इंग्लैंड का ही रिकॉर्ड तोड़ा। इंग्लैंड ने इसी विश्व कप में स्कॉटलैंड के खिलाफ छह विकेट पर 404 रन बनाए थे।

भारत अंडर-19 विश्व कप के प्लेऑफ मुकाबले में 350 से ज्यादा रन बनाने वाली पहली टीम बन गई। इससे पहले भी यह रिकॉर्ड भारत के ही नाम था। 2016 क्वार्टरफाइनल में नामीबिया के खिलाफ 349/6 रन बनाए थे, जब ऋषभ पंत ने 96 गेंदों में 111 रन की धमाकेदार पारी खेली थी।

अंडर-19 विश्व कप फाइनल में इससे पहले सबसे बड़ा स्कोर ऑस्ट्रेलिया का 253/7 था, जो उसने 2024 में भारत के खिलाफ बनाया था। भारत ने इस बार उस रिकॉर्ड को भी काफी पीछे छोड़ दिया।

यह भारत का अंडर-19 विश्व कप में तीसरा 400+

स्कोर है। दिलचस्प बात यह है कि दुनिया की किसी और टीम ने इस टूर्नामेंट में एक से ज्यादा बार 400 रन का आंकड़ा नहीं छुआ।

## भारत की पारी

टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम की शुरुआत खराब रही थी। 20 पर पहला झटका लगा था। एरॉन जॉर्ज नौ रन बनाकर आउट हुए थे। हालांकि, इसके बाद वैभव सूर्यवंशी और कप्तान आयुष म्हात्रे ने इंग्लिश गेंदबाजों की बखिया उधेड़ कर रख दी। दोनों ने दूसरे विकेट के लिए 90 गेंद में 142 रन की साझेदारी निभाई।

म्हात्रे 51 गेंद में सात चौके और दो छक्कों की मदद से 53 रन बनाकर आउट हुए। वैभव ने 32 गेंद में अर्धशतक और 55 गेंद में शतक पूरा किया। फिर 71 गेंद में 150 रन बनाए। वह 80 गेंद में 15 चौके और 15 छक्कों की मदद से 175 रन बनाए। वैभव ने तीसरे विकेट के लिए वेदांत त्रिवेदी के साथ 39 गेंद में 89 रन की साझेदारी निभाई।

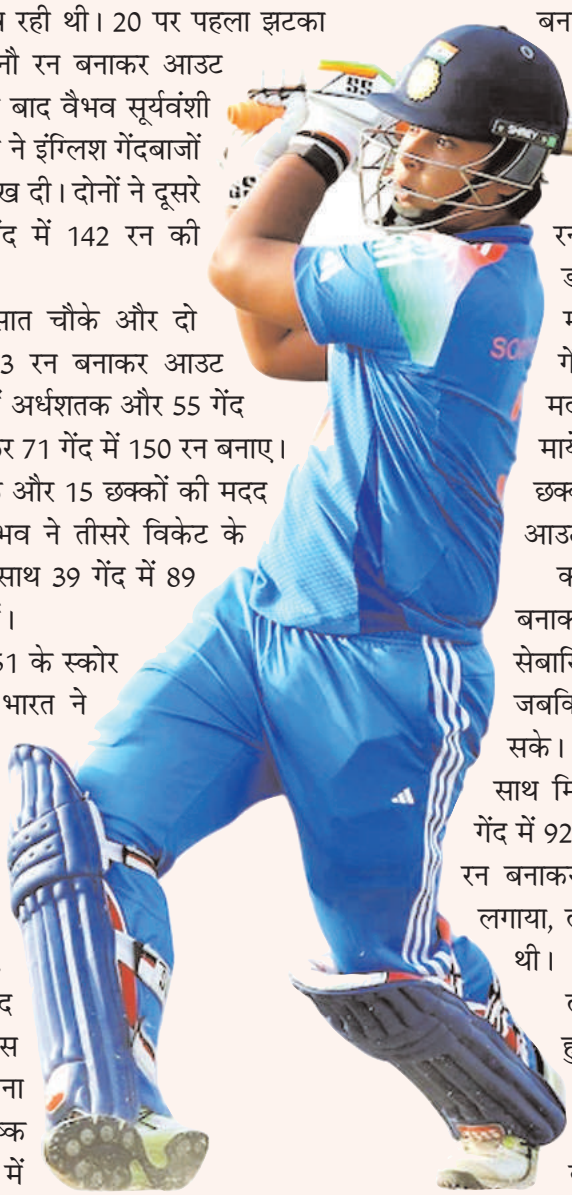

वैभव का विकेट 251 के स्कोर पर गिरा। इसके बाद भारत ने 160 रन बनाए और सात विकेट गंवाए। वेदांत ने 36 गेंद में 32 रन, विहान मल्होत्रा ने 36 गेंद में 30 रन की पारी खेली। वहीं, अभिज्ञान कुंडू ने 31 गेंद में 40 रन बनाए। आरएस अंबरीश 18 रन बना सके। वहीं, कनिष्क चौहान ने 20 गेंद में नाबाद 37 रन बनाए। खिलन पटेल तीन रन, हेनिल पटेल पांच रन बनाकर आउट हुए। इंग्लैंड की ओर से जेम्स मिंटो ने तीन विकेट लिए। वहीं, सेबास्टियन मॉर्गन और एलेक्स ग्रीन को दो-दो विकेट मिले। वहीं, मैनी लम्सडन को एक विकेट मिला।

## इंग्लैंड की पारी

जवाब में इंग्लैंड की भी शुरुआत खराब रही। 19 पर टीम को पहला झटका लगा। जोसेफ मूर्स 17 रन बनाकर आउट हो गए। इसके बाद बेन डॉकिंस और बेन मायेस ने दूसरे विकेट के लिए 49 गेंद में 74 रन की साझेदारी निभाई। मायेस और डॉकिंस के आउट होते ही इंग्लैंड का मध्यक्रम लुढ़क गया। डॉकिंस ने 56 गेंद में सात चौके और दो छक्कों की मदद से 66 रन की पारी खेली। वहीं, मायेस 28 गेंद में सात चौके और दो छक्कों की मदद से 45 रन बनाकर आउट हुए।

कप्तान थॉमस रियू 18 गेंद में 31 रन बनाकर आउट हुए। राल्फी अल्बर्ट और सेबास्टियन मॉर्गन खाता नहीं खोल सके, जबकि फरहान अहमद एक रन बना सके। जेम्स मिंटो ने कैलब फाल्कनर के साथ मिलकर आठवें विकेट के लिए 80 गेंद में 92 रन की साझेदारी निभाई। मिंटो 28 रन बनाकर आउट हुए। फाल्कनर ने शतक लगाया, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी।

लम्सडेन तीन रन बनाकर आउट हुए। फाल्कनर आखिरी विकेट के रूप में पवेलियन लौटे। वह 67 गेंद में नौ चौके और सात छक्कों की मदद से 115 रन बना सके। भारत की ओर से आरएस अंबरीश ने तीन और दीपेश देवेंद्रन ने दो विकेट लिए। वहीं, कनिष्क चौहान को भी दो विकेट लिए। खिलन पटेल और आयुष म्हात्रे को एक-एक विकेट मिला।

# - निवेदन -

स्वतंत्र बोल से संबंधित कोई भी सुझाव या शिकायत हो तो आप नीचे लिखे पते पर भेज सकते हैं। फोन और ई-मेल पर भी जानकारी दे सकते हैं। इसके अलावा आपके क्षेत्र से घटित कोई घटना, समाचार, या अन्य कोई गतिविधि जो पत्रिका में प्रकाशन योग्य हो.. तो उसे भी भेज सकते हैं।

**छत्तीसगढ़ का सबसे विश्वसनीय हिन्दी मासिक पत्रिका**
**तेजी से बढ़ता यूट्यूब चैनल और न्यूज वेबसाइट को निर्भीक और**
**जनपक्षीय पत्रकारिता के लिये आर्थिक रूप से सहयोग करें।**

**बंधन बैंक**
बैंक खाता नंबर - 20100031810292
आईएफएससी कोड - BDBL0001958

SB स्वतंत्र बोल

**संपादक स्वतंत्र बोल**
डी-317 बैंक ऑफ बड़ौदा के सामने टैगोर नगर, रायपुर (छ.ग.)
97543-74333, bolswatantra@gmail.com
swatantrabol swatantrabol www.swatantrabol.com हिन्दी मासिक पत्रिका

छत्तीसगढ़ रजत महोत्सव 25

# प्रगतिशील युवा विकसित छत्तीसगढ़

खेल प्रोत्साहन योजना लागू, ओलंपिक विजेताओं के लिए **₹1-3 करोड़** का पुरस्कार और ग्रामीण क्षेत्रों में खेल ढांचे का विकास

सरकारी नौकरियों में अधिकतम आयु सीमा में 5 वर्ष की छूट, लगभग **32,000 पदों** पर भर्ती

नवा रायपुर में क्रिकेट अकादमी की स्थापना हेतु छत्तीसगढ़ स्टेट क्रिकेट संघ को **7.96 एकड़** भूमि आवंटित

160 आईटीआई को मॉडल संस्थान में बदलने हेतु **₹484 करोड़** स्वीकृत

राज्य में युवा स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए **उद्यम क्रांति** योजना

34 नगरीय निकायों में "नॉलेज बेस्ड सोसाइटी" **हेतु लाइट हाउस** निर्माण की पहल

हमसे जुड़ने के लिए QR स्कैन करें

/ChhattisgarhCMO
/DPRChhattisgarh
www.dprcg.gov.in

**सुशासन से समृद्धि की ओर**

**श्री विष्णु देव साय**
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

**श्री नरेन्द्र मोदी**
माननीय प्रधानमंत्री

RO. No. 13670/104